॥ सीताराम ॥
15-APR-2017
१४७
श्रीरामानन्दाचार्य
मठ, अहमदाबाद

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

卐 श्रीहनुमते नमः 卐

प्रस्थात्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यप्रणीत

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करपरिशिष्ट

श्रीरामार्चनपद्धतिः

तदित्थं मुमुक्षुरुपासको मुहूर्तमात्राविशिष्टायां रात्रौ प्रतिबुध्यनिरालसप्रातः समुत्थाय धौतपाणिपादः प्राङ्मुखः स्थित्वा–

हरिः ॐ सचन्तयदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो राम विन्दन् ।
आयन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो न किरद्धानुवदे ॥
हरिः ॐ अर्वाचीसुभगे ? भव सीते ? वन्दामहे त्वा ।
यथा नः सुभगाऽससि यथा नः सुफलाऽससि ॥

इत्यादिकमनुसन्धाय बहिर्निर्गत्य दक्षिणकर्णे यज्ञसूत्रं संवेष्ट्य उत्तराभिमुखो भूत्वा मूत्रपुरीषोत्सर्जनं कुर्यात् । ततोऽतन्द्रितो गन्धलोपकरं शौचं विधाय सप्तकृत्वः सजलामलकमात्रमृत्तिकाभिर्गुदप्रक्षालनं कुर्यात् । त्रिः सकल मृत्तिकाभिर्लिङ्गशौचं च ततो दक्षिणवामहस्तौ प्रत्येकं दशकृत्व सजलमृत्तिकाभिः प्रक्षाल्य दक्षिणवामपादौ च पञ्चकृत्वस्ताभिः प्रक्षाल्य षोडश कृत्वा गण्डूषमाचरेत् । ततो द्विराचम्य शरीरशुद्धये स्नानं प्रोक्षणादिकं वा यथा शक्ति विधाय गुरुपरम्परानुसन्धानपूर्वकतत्तन्मन्त्रानुच्चार्योर्द्ध्वपुण्ड्रान्धृत्वा पुनः स्वाचार्यं ध्यात्वा गुरुपरम्परानुसन्धानपूर्वकं रहस्यत्रयं चानुसन्धाय पश्चात् सन्ध्यावन्दनादिकर्म तत्प्रयोगविधिना भगवदाज्ञया भगवत्कैङ्कर्यत्वेन च कुर्यात् ।

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

卐 प्रणीता गङ्गा 卐

सीताकान्त समारम्भां रामानन्दाचार्य मध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

Scanned by CamScanner

अनादिकाल से संसार सागर में स्वकर्म जालाभिभूत होकर संसरणशील जीवों के उद्धार हेतु जगद्गुरु श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी ने जगदुद्धार हेतु अवतरित "**रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले**" इस आगम शास्त्र बोधित करुणाशील जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज से "**तत्वं किम्**" १/४ आदि दश प्रश्न किये थे। उन प्रश्नों में पाँचवाँ प्रश्न "धर्मएकोऽस्ति कश्च" १/४ श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर के इस पाँचवें प्रश्न के जवाव में आनन्दभाष्यकार महाप्रभुजी ने सर्वधर्म मुख्यात्मक श्रीवैष्णवधर्म निरूपण प्रशङ्ग में अर्चावतार की चर्चा "**अर्चावतारोऽपि च**" ५।११ तथा **स्वयं** "**व्यक्तश्च**" ५।१२ इन श्लोकों से कर-

"**आवाहनासनाभ्यां च पाद्याद्याचमनैस्तथा।**
स्नानवस्त्रोपवीतैश्च गन्धपुष्पसुधूपकैः ॥५।१३॥
दीपनैवेद्यताम्बूल प्रदक्षिणवसिर्जनैः।
षोडशार्चाप्रकारैस्तमेतैरर्चेत्सदासुधीः ॥५।१४॥

का उपदेश किया। अर्थात् मुमुक्षु भजनानन्दी महापुरुष प्रातः उठकर के शौचादि स्नानान्त प्रात्यहिक कर्म करलेने के वाद संमार्जित पूजास्थानादि में उपस्थित होकर आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञसूत्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य-ताम्बूल, प्रदक्षिणा और विसर्जनान्त षोडशोपचार विधि से समन्त्रक सर्वेश्वर श्रीरामजी की सर्वदा पूजा करें। पूजक यदि द्विज हों तो पुरुषसूक्त विधान से पूजन करें। द्विजेतर हों तो पौराणिक विधि से नियत रूपसे अर्चना करें। इसप्रकार अतिसंक्षिप्त रूपसे श्रीविग्रह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की सेवा का उपदेश महाप्रभुजी ने किया। पर इस सूत्रात्मक उपदेश से सामान्य जन जिस प्रकार से सर्वेश्वरजी की सेवा होनी चाहिये उस प्रकार नहीं कर पायेंगे, ऐसा विचार कर कारुणिक आचार्य श्रीने श्रीमुख से ही '**श्रीरामार्चनपद्धति**' का उपदेश किया। जो कुछ विस्तृत तथा गद्यपद्य मय होने से स्वमुखारविन्द से ही उपदिष्ट श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर के लेख-परिशिष्ट भाग के रूपमें प्रसिद्ध है। कई एक व्यक्ति इस श्रीरामार्चनपद्धति को भाष्यकार की अलग कृति के रूपमें परिगणित करते हैं, क्रिया सौविध्य के लिये अलग से मुद्रित भी है पर यह है एक ग्रन्थ भास्कर का परिशिष्ट भाग ही महाभारत का शेष भाग हरिवंश के समान। अतः आचार्य प्रवर-"**तदित्थम्**" इत्यादि से पूर्वोपदिष्ट प्रसङ्गानुसन्धान पूर्वक उपदेश प्रारम्भ कर रहे हैं।

Scanned by CamScanner

भवसागर से मुक्ति की इच्छा वाले साधक को चाहिये कि दो घडी रात्रि शेष रहते ही प्रातःकाल में सर्वदा आलस्य रहित होकर उठ जायें। अनन्तर हाथ पैर धोकर यथेच्छ कुल्लाकर पूर्व दिशा के तरफ मुखकर वैठ जाय।

तब अत्यन्त तन्मयता से "**हरिः ॐ सचन्तः**" तथा "**अर्वाची**" इन मन्त्रों का तथा प्रातः स्मरण के पाँच श्लोकों या पन्द्रह श्लोकों का मधुर स्वर से अर्थानुसन्धान पूर्वक प्रार्थना करें। अनन्तर बाहर दूर जाकर दाहीने कान में यज्ञसूत्र को वेष्टित-चढाकर उत्तराभिमुख होकर मलमूत्र का त्याग करें। पुनः शौच तथा दुर्गन्ध निवारणार्थ आलस्य रहित होकर आँवले के दाने के बराबर विशुद्ध मिट्टी तथा शुद्ध जल से प्रत्येक वार सात वार गुदा को तीन वार लिङ्ग को विधिवत् प्रक्षालन कर फिर पूर्व कर्म से ही दश वार दोनों हाथ तथा पाँच वार दोनों पैर का प्रक्षालन करें। अनन्तर शुद्ध जल से स्नान करे देशकाल स्वास्थ्यादि के आनुकूल्य से प्रोक्षणादि को सम्पन्न करे। इसके वाद "**श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधो वशिष्ठावृषी योगीशं च पराशरं श्रुतिविदं व्यासं जितार्क्षं शुकम्। श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान्यतिन् श्रीमद्राघवदेशिञ्च वरदं स्वाचार्यवर्यं श्रये**। इत्यादि समस्त पूर्वाचार्यों को अपने आचार्य-अपने दीक्षा गुरु तक सभी का अनुसन्धान सादर स्मरण कर उन-उन मन्त्रों के उच्चारण पूर्वक बारह ऊर्ध्वपुण्ड्रों का धारण करके अपने आचार्य दीक्षा गुरु तथा आचार्य परम्परा के-

सीतारामसमारम्भां रामानन्दाचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

इस श्लोक के स्मरण पूर्वक रहस्यत्रय-मन्त्रराज षडक्षर चरममन्त्र तथा शरणागति मन्त्रों का अर्थ के साथ स्मरण कर अनन्तर भगवान् की आज्ञा से सर्वेश्वर श्रीरामभद्रजी का कैङ्कर्य बुद्ध्या सन्ध्या वन्दनादि नित्य कर्मों को शास्त्रीय विधान के अनुसार सम्पादन करे।

ततो दिव्यमङ्गलविग्रहस्य साङ्गसायुधसपरिवारस्य श्रीसीतासमेतस्य भगवतो रामभद्रस्य मनसैव एकैकमङ्गं ब्रह्मसृष्टिलोकोत्तरसौन्दर्यलावण्याढ्यं ध्यायन् दिव्यैः षोडशोपचारैरर्चनं विदध्यात्।

इसके वाद प्रत्येक अंग प्रत्येक आयुध-सस्त्रादि परिवार सर्वेश्वरी श्रीसीताजी से सम्पृक्त दिव्य मङ्गल श्रीविग्रह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के सर्व लोकोत्तर सौन्दर्य

Scanned by CamScanner

लावण्य से युक्त पृथक्-पृथक् अंग का मन से ही सम्यक् ध्यान करते हुये दिव्य षोडशोपचार से मानसिक अर्चना करे ।

मध्याह्निकानुष्ठानसमयेऽपि भगवच्चरणारविन्दं स्वाचार्यचरणारविन्दं च ध्यायन् स्नात्वा भगवद्विभूतिर्भगवच्छरीरभूतान् देवर्षिपितॄन् ध्यात्वा संतर्प्य च धौतवस्त्रादिकं परिधायाचम्य पूर्ववदेवोर्ध्वपुण्ड्रादिकं विधायैवमेव भगवदाराध नत्वेनैव मध्याह्निकानुष्ठानमपि कुर्यात् ।

भगवान् के मध्याह्निक आराधना के समय में भी सर्वेश्वर श्रीरामभद्रजी के चरणकमल तथा स्वाचार्य देवजी के चरणकमलों का ध्यान करते हुये स्नान क्रिया सम्पादन करके सर्वाधार श्रीरामजी की विभूति तथा शरीर भूत देवताओं और पितरों का ध्यान पूर्वक तर्पण करे । वाद में स्वच्छ वस्त्र धारणकर आचमन करके पहले बताये गये विधि के अनुसार ही ऊर्ध्वण्ड्र धारण करे । इसप्रकार से सर्वदा सर्वेश्वर श्रीरामजी की आराधना बुद्ध्या मध्याह्निक क्रिया का सम्पादन करें ।

अथैवमर्चनयोग्यो मुमुक्षुरुपासको भगवन्मन्दिरं प्रविश्य→

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधोवशिष्ठावृषी
योगीशञ्चपराशरं श्रुतिविदं व्यासं जितक्षं शुकम् ।
श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतीन्
श्रीमद्राघवदेशिकञ्च वरदं स्वाचार्यवर्यंश्रये ॥

इत्यादिश्रीगुरुपरम्परादिकमनुसन्दधत्साष्टाङ्गत्वेन दण्डवद्भगवन्तं प्रणम्य, अर्चनपात्रादीनि संमृज्य शुद्धजलेन संप्रक्षाल्य समर्चनीयदेवस्य दक्षिणपार्श्वे समुपविश्य पूर्वदिनसमर्पितगन्धमाल्यतुलसीदलादिमपनीयपीठोपरिसन्निवेश्य आग्नेयादारभ्य प्रदक्षिणक्रमेण, अर्घ्यपाद्याचमनस्नानपात्राणि संस्थाप्य तेषां मध्ये शुद्धजलपात्रं निधाय→

पूर्व में प्रदर्शित क्रिया के द्वारा सर्वेश श्रीरामजी की अर्चना के योग्य हुए सायुज्य मोक्ष की इच्छावाले उपासक को भगवान् के मन्दिर में प्रवेशकर श्रीरामजी श्रीजानकीजी श्रीहनुमानजी श्रीब्रह्माजी, श्रीवशिष्ठऋषिजी योगियों में श्रेष्ठ श्रीपराशरजी वेदज्ञाता श्रीव्यासजी जितेन्द्रिय श्रीशुकदेवजी सर्वगुणों के खजाने ऐश्वर्यशाली श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन यतियों में श्रेष्ठ गङ्गाधराचार्यजी आदि समस्त पूर्वाचार्यों के साथ अपने गुरुदेव वरदाता श्रीमान् जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी का मैं

Scanned by CamScanner

आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य आश्रय लेता हूँ। अर्थात् समस्त पूर्वाचार्यों को सादर दण्डवत् प्रणाम करता हूँ।

श्लोक के आदि शब्द से श्रीसदानन्दाचार्यजी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी श्रीद्वारानन्दाचार्यजी, श्रीदेवानन्दाचार्यजी, श्रीश्यामानन्दाचार्यजी, श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी, श्रीचिदानन्दाचार्यजी, श्रीपूर्णानन्दाचार्यजी, श्रीश्रियानन्दाचार्यजी तथा श्रीहर्यानन्दाचार्यजी का ग्रहण होता है। क्योंकि श्रीआचार्यजी के परम्परा में श्रीरामजी से लेकर उनके गुरुदेव जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी तक २१ आचार्य हैं। अतः आचार्य प्रवर आनन्दभाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्यजी श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के २२ वें आचार्य हैं। इत्यादि श्रीगुरु परम्परादिक का अनुसन्धान करते हुये समाराधनीय भगवान् को सादर साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करके पूजा के पात्रों को मलकर शुद्ध जल से धोकर स्वच्छ करे, अनन्तर समाराधनीय देव के दाहिने भाग में बैठकर पहले दिन के चढे पुष्प चन्दन गन्ध तुलसीदल माला आदि को वहां से हटाकर पीठ वा डाली में रखकर एक तरफ कर दें अनन्तर अग्निकोण से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणा क्रमसे अर्घ्य पात्र पाद्य पात्र, आचमनीय पात्र स्नानीय पात्रों का स्थापनकर उनके मध्य में शुद्ध जल पात्र का स्थापन कर-

तत्रार्घ्यपात्रे सिद्धार्थाक्षतकुशाग्रतिलयवगन्धफलपुष्पसहितंजलं निक्षिपेत् (१) दूर्वाविष्णुपर्णीपद्मश्यामाकसहितं जलं पाद्यपात्रे निक्षिपेत्। (२) एलालविङ्गकङ्कोलजातिसहितं जलमाचनपात्रे निक्षिपेत्। (३) कोष्टमाजिष्ठहरिद्रामुस्ताशैलेयचम्पकवचकर्पूरलामज्जकसहितं जलं स्नानपात्रे निक्षिपेत् ॥४॥

अनन्तर अर्घ्य पात्र में सरसों, अक्षत, कुशाग्र तिल यव गन्ध फल फूल सहित शुद्ध छाना हुआ जल डाले। पाद्य पात्र में दूर्वा विष्णुपर्णी कमल तथा श्यामाक-साबा सहित जल डाले। आचमनीय पात्र में इलायची लवंग, कंकोल तथा जायफल सहित जल डाले। स्नानीय पात्र में कूठ मजीठ, हल्दी मोथा छडीला चम्पा वच कपूर तथा लमज्जक रस सहित जल डाले।

तदेतदभावेतु तद् वाक्योच्चारणपूर्वकं तुलसीदलमेव तत्तत्तोयपात्रे निक्षिपेत्। श्रीमन्त्रराजेन प्रत्येकं तत्तत्पात्रं संमन्त्र्य सुरभिमुद्रां च प्रदर्श्य बामपार्श्वे पूर्णकुम्भं निधाय अन्यानि पूजाद्रव्याणि दक्षिणपार्श्वे च निधाय मनसा स्वाचार्यमर्घ्यादिभिः सम्पूज्यतद्हस्तेनैवाराधनं स्वीकार्यमिति भगवते विज्ञाप्य

Scanned by CamScanner

प्राणायामत्रयं च कृत्वा भगवदुत्थापनाय भगवन्तं प्रार्थयेत् ।

पूर्वोक्त उन सभी वस्तुओं के अभाव में उन-उन वस्तुओं का नाम लेकर अर्घ्यादि पात्रों में केवल तुलसी सहित जल डाले । इसके वाद अर्घ्यादि सभी पात्रों को श्रीतारक मन्त्र से संमन्त्रित करके सुरभिमुद्रा दिखाकर अपनी वाम भाग में शुद्ध जल से भरा पात्र तथा अन्य पूजन की समस्त सामग्री को अपनी दाहिने भाग में रखकर अपने आचार्यजी की अर्घ्यादि से मानसिक पूजन करके श्रीआचार्यदेवजी के द्वारा ही मानसिक भावना से पूजन वस्तुओं को आरध्य देव को समर्पण करे । तात्पर्य यह कि भगवन् ? मैं तो अल्पज्ञ हूँ अतः आपकी आराधना में पूर्णतया असमर्थ हूँ अतः हमारे श्रीआचार्य देव के द्वारा ही आप मेरी आराधना को स्वीकार करें । इसप्रकार प्रार्थना करके तीन वार प्रणायाम करके आराध्य देव को शयन से उठाने के लिए इन निम्न लिखित श्लोकों द्वारा अति विनम्र भाव से प्रार्थना करे→

कौशल्यासुप्रजाराम ? पूर्वासन्ध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल ? कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥१॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रं ते त्यजनिद्रां जगत्पते ? ।
त्वदीयोत्थानमात्रेण उत्थितं भूवनत्रयम् ॥२॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीराम ? भद्रं ते करुणानिधे ? ।
उत्तिष्ठजानकीकान्त ? त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥३॥
अप्रेमयकृपासिन्धुस्वरूपे ? रामसुप्रिये ? ।
सुप्रभातानिशा सीते ? श्रीरामाभिमुखीभव ॥४॥

श्रीभगवद्रामचन्द्राभिमतानुरूपगुणविभवैश्वर्यशीलाद्यनवधिकातिसयासंख्येय कल्याणगुणगणां पद्मवनालयां पद्माननां पद्मदलायताक्षीं नित्यानपायिनीं भगवतीं निरवद्यां श्रीसीतां श्रीरामदिव्यमहिषीमखिलजगन्मातरमशरणशरण्याम नन्यशरणः शरणमहं प्रपद्ये ।

स्वशेषभूतेन मया स्वीयैः सर्वपरिच्छदैः ।
विधातुं प्रीतमात्मानं देवः प्रक्रमते स्वयम् ॥

इतिश्लोकञ्चानुसन्धाय पञ्चोपनिसन्न्यासं कुर्यात् ।

अनन्य पतिव्रता श्रीकौशल्यादेवीजी के सुपुत्र सर्वेश्वर श्रीरामजी ? प्रातः कालिन सन्ध्या का समय हो रहा है अतः हे नरशार्दूल श्रीरामजी ? आप शैया से उठें कारण

Scanned by CamScanner

यह कि प्रातःकाल हो रहा है अतः देवाराधनादि दैनिक क्रियाओं को सम्पादन करना चाहिये। उन दैनिक क्रियाओं को सम्पादनार्थ आपका शरणापन्न यह सेवक उपस्थित है अतः सर्वेश्वर श्रीरामजी ? आप जागें ॥१॥ हे जगत्पति श्रीरामजी ? आप निद्रा को त्यागकर जग जाएं सुकोमल शैया को त्यागकर उठ जाएं हे जगन्नियन्ता ! आपका कल्याण हो। प्रभो ? आपके उत्थान यानी उठ जाने से तीन लोक उठ जायगा अर्थात् तीनों लोक के जीव जगकर अपनी-अपनी नित्य नैमित्तिक प्रवृत्तियों में लगजायेंगे अतः लोगों की सत्प्रवृत्ति के लिए आप जागें।२। हे श्रीरामजी ? आप जागें हे करुणा के समुद्र श्रीरामचन्द्रजी ? आप जग जाए प्रभो ? आपका कल्याण हो। हे जानकी कान्त श्रीरामजी ? आप उठ जाए। उठकर तीनों लोकों का कल्याण करें ॥३॥ अमित कृपा के सिन्धु स्वरूप हे जानकीजी ? हे श्रीरामप्रिया श्रीसीताजी ? प्रातःकाल हो गया है। अतः सर्वेश्वरी हे सीताजी ? उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर सर्वेश्वर श्रीरामजी के अभिमुख-संमुख हो जांय तथा श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा के अनुसार सव कृत्य सम्पादन करावें ॥४॥

अनन्त ऐश्वर्यशाली सर्वेश्वर श्रीरामजी के अनुरूप गुण विभव ऐश्वर्य आदि अनवधिकातिशय अर्थात् सर्वोत्कृष्ट परमावधि से रहित उत्कृष्ट वाली यानी सर्वोत्तम ऐश्वर्यशाली तथा असंख्येय यानी अनन्त कल्याणगुण समुदायों से सम्पन्न तथा दिव्य कमल वनों में आवासशील दिव्य कमल के समान मुख कमल वाली और दिव्य कमलदल पत्र के समान अति सुन्दर सर्वजन मोहक आँख वाली तथा नित्य अनपायिनी अर्थात् अनवरत सर्वदा सर्वकाल देश आदि में एकरूप से स्थिर रहनेवाली भगवती यानी उत्त्पत्ति प्रलय अगति गति विद्या अविद्या प्रभृति छ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पृक्त तथा निरवद्य यानी कर्म से होनेवाले संकोच विकाश आदि सर्वदोषों से सर्वदा रहित रहनेवाली सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी से सर्वदा अभिन्न रहनेवाली श्रीरामजी की दिव्य पत्नी सर्वेश्वरी श्रीसीताजी जो सम्पूर्ण जगत् की माता शरण रहित सव जीवों को अपने शरण में रखकर सर्वदा के लिए अभय करनेवाली सर्वेश्वरी श्रीसीताजी हैं उनके शरण में अन्य शरण रहित मैं जाता हूँ, अर्थात् अन्य शरण रहित शरणागत सव जीवों को संसार भय से मुक्तकर देनेवाली सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के शरण में मैं जाता हूँ। सर्वेश्वर श्रीरामजी के आराधना करने में मेरे जैसे अल्पज्ञ जीव को गति ही क्या अतः परम कारुणिक सर्वशरण्य श्रीरामचन्द्रजी अपने शेष स्वरूप मेरे तथा श्रीरामजी के नित्य

Scanned by CamScanner

परिचायक नित्यमुक्त सेवकों के द्वारा अपना अभीप्सित सम्पादन करने के लिए भी मेरे जैसे संसार चक्र में पतित जीव का उद्धार करने के लिए स्वयं ही शुभ कार्यारम्भ कर रहे हैं। इसप्रकार एकान्तिक रूपसे अनुसन्धान-ध्यान करके पञ्चोपनिषद् वाक्यों का न्यास करें। वे इसप्रकार से हैं-

ॐ षां नमः पराय परमेष्ठ्यात्मने नमः इति शिरसि ॥१॥

ॐ यां नमः पराय पुरुषात्मने नमः इति नासाग्रे ॥२॥

ॐ रां नमः पराय विश्वात्मने नमः इति हृदये ॥३॥

ॐ वां नमः पराय निवृत्त्यात्मने नमः इति गुह्ये ॥४॥

ॐ लां नमः पराय सर्वात्मने नमः इति पादयो ॥५॥

ॐ षां नमः पराय परमेष्ठ्यात्मने नमः इस मन्त्र को बोलकर शिर का स्पर्श करना। **ॐ यां नमः पराय पुरुषात्मने नमः** इस मन्त्र को वोलकर नाक के अग्र भाग का स्पर्श करना। **ॐ रां नमः पराय विश्वात्मने नमः** इस मन्त्र को वोलकर हृदय का स्पर्श करना। **ॐ वां नमः पराय निवृत्त्यात्मने नमः** इस मन्त्र को वोलकर गुह्य गुप्ताङ्ग का स्पर्श कर हाथ धोवें। **ॐ लां नमः पराय सर्वात्मने नमः** इस मन्त्र को वोलकर दोनों पैरों का स्पर्श करना।

एवं पञ्चोपनिषद् न्यासं विधाय श्रीमन्त्रराजन्यासं कुर्यात्।

ॐ रां ज्ञानाय हृदयाय नमः। ॐ नमः ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ रामाय शक्त्यै नमः शिखायै वषट्। ॐ बलाय कवचाय हुम्। ॐ तेजसे नेत्राभ्यां बौषट्। ॐ रामाय विर्याय-अस्त्राय फट्।

पूर्व में बताये अनुसार पञ्चोपनिषद् वाक्यों का न्यास करने के वाद निचे बताये अनुसार से श्रीमन्त्रराज का न्यास करे **ॐ रां ज्ञानाय हृदयाय नमः** ऐसा बोलकर हृदय प्रदेश का स्पर्श करे **ॐ नमः ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा** ऐसा बोलकर शिरका स्पर्श करे। **ॐ रामाय शक्त्यै नमः शिखायै वषट्** ऐसा बोलकर शिखा का स्पर्श करे। **ॐ बलया कवचाय हुम्** ऐसा बोलकर दोनों हाथों के मूल भाग का परस्पर में स्पर्श करे। **ॐ तेजसे नेत्राभ्यां वौषट्** ऐसा बोलकर दोनों नेत्रों का स्पर्श करे। **ॐ रामाय वीर्याय अस्त्राय फट्** ऐसा बोलकर दक्षिण हाथ को शिर पर घुमाकर ताली बजावें।

इति मन्त्रराजन्यासमनुष्ठाय पूर्वस्थापितस्ववामपार्श्वस्थपूर्णकुम्भे श्रीरामन्त्रोच्चारणपूर्वकं तुलसीदलं निक्षिप्य श्रीमन्त्रराजेनैवाभिमन्त्र्य तज्जले

Scanned by CamScanner

नार्घ्यादिपञ्चपात्राणि क्रमेण षडक्षरमन्त्रोच्चारणपूर्वकं प्रपूर्य उद्धरण्यार्घ्यादि पञ्चपात्रेभ्यः किञ्चित्किञ्चित्तोयं समुद्धृत्यपूर्णकुम्भेनिक्षिपेत् । तत उद्धरण्यार्घ्यसलिलमादायनासाग्रपर्यन्तमुत्धृत्य ॐ विरजे आगच्छागच्छेति सप्तकृत्वा उक्त्वा तत्तोयेनात्मानं पूजोपकरणानि यागभूमिं च प्रोक्ष्यापशिष्टमन्यत्र प्रक्षिपेत् ।

पूर्वोक्त रीति से श्रीमन्त्रराज का न्यास करने के वाद अपने वाम भाग में पहले रखे पूर्ण कुम्भ में श्रीराममहामन्त्र का उच्चारण करते हुये तुलसीदल को डाले । पुनः श्रीराममन्त्र से ही अभिमन्त्रित करके उसी जल से अर्घ्यादि पञ्चपात्रों को अर्घ्यपात्र के क्रम से षडक्षर श्रीमन्त्रराज के उच्चारण पूर्वक पढकर पुनः दक्षिणावर्त शङ्ख या आचमनीय से पाचों पात्रों से थोडा-थोडा जल निकाल कर पूर्ण कुम्भ में डाल दें। इसके वाद दक्षिणावर्त शङ्ख या आचमनी से अर्घ्यपात्र से जल लेकर अपने नाक के आगे तक ऊपर उठाकर **ॐ विरजे आगच्छ आगच्छ** इस आवाहन वाक्य को सात वार बोलकर उस जल से अपना देह एवं सव पूजा की सामग्री यागभूमि-मन्दिर को भी प्रक्षालन-सिंचन करके अवशिष्ट जल को अन्यत्र डाल दे ।

ततस्तुलसीदलं समादाय हरिः ॐ

साकेतं दिव्यलोकं सुरतरुमतुलं तत्र रत्नालिगर्भं
हैमं सिंहासनं तच्छुभरुचिनिचयं भानुकोटिप्रकाशम् ।
पद्मं चानेकपत्रं कपिनिकरपतिं पादुके वातजातं
सुग्रीवान् द्वारपालान् नलगवयमुखान् रामभक्तान् प्रपद्ये ॥१॥
वामं पादं प्रसार्याश्रितकलुषहरं दक्षिणं कुञ्चयित्वा
जानुन्याधाय दिव्ये रिपुकुलदमने बाणचापे दधत्सः ।
रामः पाणिद्वयेन प्रतिभटभयदः पद्मगर्भारुणाक्षो
देवीभूषादिजुष्टो वितरतु जगतां शर्मसाकेतनाथः ॥२॥

इति पद्यैरित्थमनुसन्धाय श्रीसीतासमेत भगवच्छ्रीरामचन्द्रचरणारविन्दे तत्प्रक्षिपेत् ।

अनन्तर तुलसीदल को हाथ में लेकर हरिः ॐ इसप्रकार उच्चारण कर दिव्यलोक श्रीसाकेत में स्थिर वर्णनातीत कल्पवृक्ष के निचे रत्न समूह से रचित दिव्य सुवर्ण सिंहासन जो कि करोडों सूर्य के प्रकाश से भी अधिक प्रकाशवाला तथा

Scanned by CamScanner

कल्याण प्रद और जनमन मोहक है उसके मध्य में अनेक पत्रवाले दिव्य कमलासन में विराजमान सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी हैं जिनके चारों तरफ कपि सेनापतियों का समूह स्थित है तथा श्रीरामजी के चरणारविन्द की सेवा करते हुये श्रीहनुमानजी हैं। सुग्रीव नल नील आदि प्रधान-प्रधान लोग द्वारपाल के रूपमें स्थिर हैं। ऐसे श्रीराम सेवा परायण श्रीरामभक्त तथा सर्वेश्वर श्रीरामजी के शरण में मैं हूँ यानी सपरिकर श्रीरामजी को सादर प्रणाम करता हूँ ॥१॥ सम्पूर्ण कलुष कल्मष पाप के अपहरण करनेवाले वाम पाद को प्रसार्य-लम्बाकर लटकाकर तथैव सर्व पाप ताप संहारक दक्षिण पाद को मूढकर जानु के ऊपर रखकर विराजमान तथा दिव्य दोनों करकमलों से शत्रु कुल का दमन यानी नाश करनेवाले दिव्य धनुष और बाण धारण किये हुये वे सर्वलोक प्रसिद्ध सर्वेश्वर श्रीरामजी जो कि कमल के बीच के भाग के समान अरुण यानी लाल आँख वाले प्रतिपक्षिवीरों को भय देनेवाले यानी दमन करनेवाले दिव्य महिषी श्रीसीताजी तथा अनेक दिव्य आभूषणों से सुशोभित दिव्यधाम श्रीसाकेतलोक के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी सव संसार को कल्याण प्रदान करें ॥२॥

इत्यादि पद्यों से ऊपर वर्णित रूपसे ध्यान धरकर सर्वेश्वरी श्रीसीताजी सहित सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविन्दों में हाथ में ली हुई तुलसी आसन के रूपमें समर्पण करें।

अथैवमासनं कल्पयित्वा ओमाधारशक्त्यै नमः इति आधार शक्त्यै अर्घ्यादीनि समर्पयामि। ॐ प्रकृत्यै नमः इति प्रकृत्यै अर्घ्यादीनि समर्पयामि। ॐअखिलजगदा धाराय कूर्मरूपिणे नारायणाय नमः इति तस्मै अ०। ॐ भगवतेऽनन्ताय नागराजाय नमः इति तस्मै अ०। ॐ भूम्यै नमः इति तस्मै अ०। ॐ श्रीसाकेताय दिव्यनगराय नमः इति तस्मै अ०। ॐ पुष्पकाय दिव्यविमानाय नमः इति तस्मै अ०। ॐ श्रीसाकेताय दिव्यजनपदाय नमः तस्मै अ०। ॐ आनन्दमयदिव्यरत्नमण्डपाय नमः अ०। ॐ आस्तरणभूताय अनन्ताय नमः अ०।

पूर्वोक्त क्रम से आसन की कल्पना करके निम्न प्रकार से आधार शक्ति आदि की पूजा करे **ॐ आधार शक्त्यै नमः** अर्घ्यादीनि समर्पयामि इस मन्त्र को बोलकर आधार शक्ति की पाद्य अर्घ्य आचमनीय आदि षोडशोपचार या यथा मिलितोपचार यानी सोलह पदार्थों से या जितने पदार्थ की शक्यता हो उतने ही पूजा की सामग्री से पूजा करे। अर्घ्यादि में आदि शब्द से अन्य पूजा द्रव्यों का ग्रहण करना चाहिये

Scanned by CamScanner

जो देशकाल तथा शक्ति के अनुसार जुटाई गई हो। **ॐ प्रकृत्यै नमः इति प्रकृत्यै अर्घ्यादीनि समर्पयामि** ऐसा बोलकर यथोपचार सामग्री से प्रकृति की पूजा करे। तथैव **ॐ अखिल जगदाधाराय कूर्मस्वरूपिणे नारायणाय नमः** ऐसा बोलकर निखिल ब्रह्माण्ड के आधारभूत कूर्मजी की पूजा करे। **ॐ भगवते अनन्ताय नारायणाय नमः** इसप्रकार बोलकर सर्वोपचार से नागराज की पूजा करे। **ॐ भूम्यै नमः** ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्य से भूमिकी पूजा करे। **ॐ श्रीसाकेत दिव्य नगराय नमः** ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्य से सर्वापेक्षया पर रूपसे स्थित दिव्य धाम श्रीसाकेतजी की पूजा करे। **ॐ पुष्पकाय दिव्यविमानाय नमः** ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्यों से दिव्य पुष्पक विमान की पूजा करे। **ॐ श्रीसाकेताय दिव्य जनपदाय नमः** ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्यों से श्रीसाकेत नामक दिव्य जनपद की पूजा करे। **ॐ आनन्दमयाय दिव्यरत्नमण्डपाय नमः** ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्य से आनन्द स्वरूप दिव्यरत्न मण्डप की पूजा करे। **ॐ आस्तरण भूताय अनन्ताय नमः** ऐसा बोलकर सर्वोपचार द्रव्यों से आस्तर स्वरूप यानी ऊपर का विछौना के रूपमें अनन्त की पूजा करे। इसके वाद-

आग्नेय्यां दिशि ॐ धर्माय पीठपादाय नमः अ०। नैऋत्यां ॐ ज्ञानाय पीठपादाय नमः अ०। वामव्यां ॐ वैराग्याय पीठपादाय नमः अ०। ऐशाव्यां ॐ ऐश्वर्याय पीठपादाय नमः अ०। मध्ये ॐ पीठभूताय अनन्ताय नागराजाय नमः अ०। प्रच्यां ॐ अधर्माय पीठगात्राय नमः अ०। दक्षिणस्याम् ॐ अज्ञानाय पीठगात्राय नमः अ०। पश्चिमायां ॐ अवैराग्याय पीठगात्राय नमः अ०। उत्तरस्यां ॐ अनैश्वर्याय पीठगात्रा नमः अ०।

ॐ धर्माय पीठपादाय नमः इस मन्त्र को बोलकर प्रथम सिंहासन के अग्निकोण की अर्घ्यादि सर्वोपचार से पूजा करे। **ॐ ज्ञानाय पीठपादाय नमः** ऐसा बोलकर नैऋत्यकोण की पूजा करे। **ॐ वैराग्याय पीठपादाय नमः** ऐसा बोलकर वायव्यकोण की पूजा करे। **ॐ ऐश्वर्याय पीठपादाय नमः** ऐसा बोलकर ईशानकोण की पूजा करे। **ॐ पीठभूताय अनन्ताय नागराजाय नमः** ऐसा बोलकर मध्य भाग की पूजा करे। **ॐ अधर्माय पीठगात्राय नमः** ऐसा बोलकर सिंहासन के पूर्व भाग की पूजा करे। **ॐ अज्ञानाय पीठगात्राय नमः** ऐसा बोलकर दक्षिण भाग की पूजा करे। **ॐ अवैराग्याय पीठगात्राय नमः** ऐसा बोलकर पश्चिम दिशा की पूजा करे।

Scanned by CamScanner

ॐ अनैश्वर्याय पीठगात्राय नमः ऐसा बोलकर उत्तर दिशा की पूजा करे।

एभिः परिच्छिन्नतत्वसदसदात्मकाय नमः अ०। ॐ ऋग्वदाय पीठवाहकाय नमः अ०। ॐ यजुर्वेदाय पीठवाहकाय नमः अ०। ॐ सामवेदाय पीठवाहकाय नमः अ०। ॐ अथर्ववेदाय पीठवाहकाय नमः अ०। इत्थं गन्धपुष्पादिभिस्तान भ्यर्च्य प्रणमेत्।

ॐ एभिः परिच्छिन्नतत्त्वसदसदात्मकाय नमः ऐसा बोलकर अधर्म अज्ञान वैराग्य तथा अनैश्वर्य रूपमात्र से मुक्त कार्य तथा कारण स्वरूप पीठ तन्त्र की सर्वोपचार से पूजा करे। पुनः **ॐ ऋग्वेदाय पीठवाहकाय नमः** ऐसा बोलकर पूर्व दिशा में ऋग्वेद की पूजा करे। **ॐ यजुर्वेदाय पीठवाहकाय नमः** ऐसा बोलकर दक्षिण दिशा में यजुर्वेद की पूजा करे। **ॐ सामवेदाय पीठवाहकाय नमः** ऐसा बोलकर पश्चिम दिशा में सामवेद की पूजा करे। **ॐ अथर्ववेदाय पीठवाहकाय नमः** ऐसा बोलकर उत्तर दिशा में अथर्ववेद की पूजा करे। ऊपर बताये अनुसार गन्धपुष्प अक्षत आदि यथोचित पूजा सामग्री से भगवान् के सिंहासन को बहन करनेवाले बाहक रूप चारों वेदों की पूजाकर प्रणाम करे।

अथ पीठवाहकोपरि ॐ परिच्छिन्नतनवे पीठभूताय शुद्धात्मकायाऽनन्ताय नागराजाय नमः इति तस्मै अ०। तत्रानन्तोपरि ॐ अष्टदल पद्माय नमः इति तस्मै अ०। तद्दलेषु ॐ सूर्याय नमः अ०। केशरेषु ॐ सं सोममण्डलाय नमः अ०। कर्णिकायाम् ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः अ०।

पूर्व में बताये अनुसार वेदों की पूजा करने के वाद **ॐ परिच्छिन्नतनवे पीठभूताय शुद्धात्मकायाऽनन्ताय नागराजाय नमः** ऐसा बोलकर पीठवाहक चारों वेदों के ऊपर पीठ स्वरूप शेष की सर्वोपचार द्रव्यों से पूजा करे। पुनः अनन्त के ऊपर में **ॐ अष्टदल पद्माय नमः** ऐसा बोलकर अष्टदल कमल की पूजा करे। **ॐ सं सूर्याय नमः** ऐसा बोलकर अष्टदल कमल के दलों पत्तों पर सूर्यमण्डल की पूजा करे। **ॐ सं सोममण्डलाय नमः** ऐसा बोलकर कमल के केसरों में चन्द्रमण्डल की पूजा करे। **ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः** ऐसा बोलकर अष्टदल कमल के कर्णिका में अग्निमण्डल की पूजा करे।

इति मण्डलत्रयं ध्यात्वा पद्मस्य पूर्वपार्श्वदले ॐ विमलायै चामरहस्तायै नमः इति तस्यै अ०। पद्मस्याग्निकोणे ॐ उत्कर्षिण्यै चामरहस्तायै नमः इति अ०।

Scanned by CamScanner

पद्मस्य दक्षिणदले ॐ ज्ञानरूपायै चामरहस्तायै नमः अ०। पद्मस्य नैऋत्यदले ॐ क्रियायै चामरहस्तायै नमः अ०। पद्मस्य पश्चिमदले ॐ योगायै चामरहस्तायै नमः अ०। पद्मस्य वायव्यदले ॐ सत्यायै चामरहस्तायै नमः अ०। पद्मस्योत्तरदले ॐ प्रह्व्यै चामरहस्तायै नमः अ०। पद्मस्यैशानदले ॐ ऐशानायै चामरहस्तायै नमःअ०।

पूर्वोक्त प्रकार से अष्टदल कमल में तीनों मण्डल का शान्तचित्त से ध्यान कर यथोपचार पूजा करके **ॐ विमलायै चामरहस्तायै नमः** इस मन्त्र को बोलकर कमल के पूर्व भाग के दल में हाथ में चमर ली हुई विमलाजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। तथैव **ॐ उत्कर्षिण्यै चामरहस्तायै नमः** इस मन्त्र को बोलकर कमल के अग्निकोण के दल में चमर हस्ता उत्कर्षिणी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ ज्ञानरूपायै चामरहस्तायै नमः** ऐसा बोलकर कमल के दक्षिणदल में चमर ली हुई ज्ञानरूपा की अर्घ्यादि रूपसे पूजा करे। **ॐ क्रियायै चामरहस्तायै नमः** ऐसा बोलकर कमल के नैऋत्यकोण के दल में हाथ में चमर ली हुई क्रिया शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ योगायै चामरहस्तायै नमः** ऐसा बोलकर कमल के पश्चिम दल में हाथ में चमर ली हुई योगशक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ सत्यायै चामरहस्तायै नमः** ऐसा बोलकर कमल के वायव्यकोण वाले दल में हाथ में चमर ली हुई सत्य स्वरूपा शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ प्रह्व्यै चामरहस्तायै नमः** ऐसा बोलकर कमल के उत्तर तरफ के दल में हाथ में चमर ली हुई प्रह्वी नामक शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ ऐशानायै चामरहस्तायै नमः** ऐसा बोलकर कमल के ईशान वाले दल में हाथ में चमर ली हुई ऐशानीरूपा शक्ति की अर्घ्यादि से पूजा करे। अनन्तर-

भगवतोऽग्रे कर्णिकायाः पूर्वभागे ॐ अनुग्रहायै नमः अ०। पद्मस्य कर्णिकायां ॐ जगत्प्रकृतये दिव्ययोगपीठवाहकाय नमः अ०। दिव्ययोगपीठ वाहकोपरि ॐ दिव्ययोगपीठाय नमः अ०। योगपीठे ॐ दिव्ययोगपर्यङ्काय नमः अ०। पर्यङ्कोपरि ॐ सहस्रफणशोभिताय नमः अ०। पुरो ॐ भगवत्पादपीठाय नमः अ०। तदुपरि ॐ भगवत्पादुकाभ्यां नमः अ०।

ॐ अनुग्रहायै नमः इस मन्त्र को बोलकर भगवान् श्रीरामजी के आगे अष्टदल कमल की कर्णिका के पूर्व दिशा में अनुग्रहा रूपा शक्ति की अर्घ्य आदि सर्वोपचार द्रव्यों से पूजा करे। **ॐ जगत्प्रकृतये दिव्ययोगपीठवाहकाय नमः** ऐसा बोलकर अष्टदलकमल के कर्णिका में दिव्य योगपीठ वाहक की अर्घ्य आदि से पूजा करे। **ॐ**

Scanned by CamScanner

दिव्ययोगपीठाय नमः ऐसा बोलकर दिव्ययोगपीठवाहक के ऊपर दिव्ययोगपीठ की अर्घ्य आदि से पूजा करे। **ॐ दिव्ययोग पर्यङ्काय नमः** ऐसा बोलकर योगपीठ पर दिव्ययोग पर्यङ्क की अर्घ्य आदि से पूजा करे। **ॐ सहस्रफणशोभिताय नागराजाय नमः** ऐसा बोलकर पर्यङ्क के ऊपर सहस्रफण से शोभित नागराज की अर्घ्य आदि से पूजा करे। **ॐ भगवत् पाद पीठाय नमः** ऐसा बोलकर भगवान् के सामने भगवान् के पादुका पीठ की अर्घ्य आदि से पूजा करे। **ॐ भगवत्पा- दुकाभ्यां नमः** ऐसा बोलकर पादुका पीठ के ऊपर भगवान् के दिव्य पादुका-खडाउ की अर्घ्य आदि से पूजा करे।

अथतादृशाष्टदलपद्मस्थपर्यङ्कस्थितानन्तोपरि-
प्रपन्नाभिष्टसंदोहश्रीराम? करुणानिधे ?। शिवशेषाद्यविज्ञेयाशेषमाहात्म्य राघव? १
तादृश्यासीतयाऽऽगच्छपार्षदेन सहप्रभो?।आज्ञां क्रियस्वदासस्यप्रपन्नस्यार्चनायमे२

इतिश्रीसीतासहितमप्रमेयकृपारत्नाकरं भगवन्तं साङ्गं सायुधं सपरिवारं सवाहनं स्वशक्तियुक्तं श्रीरामचन्द्रमावाह्य पुष्पाञ्जलिं च तस्मै प्रदाय पूर्वस्थापि तार्घ्यपात्रादुद्ध रण्यार्घ्यजलमादाय ॐ श्रीसीतासमेतायाप्रमेयकृपारत्ना कराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः मध्ये रां रामाय नमः वामे श्रीं सीतायै नमः इति तत्तन्मन्त्रैः पृथक् पृथक् वा अर्घ्यं समर्पयामीत्युक्त्वा भगवतो दक्षिणहस्तं प्रोक्षन्निव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे प्रक्षिपेत् ।

पूर्व कथित विधान से भगवान् के पादुकान्त पूजा हो जाने के वाद पहले वर्णित अष्टदल कमल में स्थित अनन्त के ऊपर निम्नरूप से सपरिकर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी का आवाहन करे। शरण में आये हुये सभी जनों के इच्छित पदार्थ को देनेवाले हे करुणा के खजाने सर्वेश्वर श्रीरामजी ? शिव शेषनाग सर्वदेव समूह सरस्वती प्रभृति से सर्वदा प्रयत्न करने पर भी आपका सम्पूर्ण माहात्म्य नहीं जाना जा सका ऐसे अनन्त महात्म्यशाली रघुकुलश्रेष्ठ हे श्रीराघवजी ? सर्वसमर्थ प्रभो श्रीरामजी ? आप से अभिन्न स्वरूपा नित्य सहचारी सर्वेश्वरी श्रीसीताजी तथा पार्षदों के साथ पधारें तथा आपके शरण में आये आपका नित्य किंकर मुझे आपकी पूजा करने के लिए आज्ञा प्रदान करें। इसप्रकार प्रार्थना पूर्वक सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के साथ अप्रेमय अमित कृपा के समुद्र सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को आयुध-दिव्यास्त्र धनुष बाण आदि सपरिवार बाहन अनन्तानन्त अपनी शक्तियों के साथ श्रीरामचन्द्रजी को आवाहन करके पुष्पाञ्जलि श्रीचरणों में समर्पण करके पहले से स्थापित अर्घ्यपात्र से दक्षिणावर्त

Scanned by CamScanner

शङ्ख या आचमनी से अर्घ्य जल लेकर **ॐ श्रीसीतासमेताय अप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः** इस मन्त्र को बोलकर श्रीरामजी का दाहिना हाथ प्रक्षालन की भावना से अर्घ्यं समर्पयामि ऐसा कहते हुये हाथ में लिया अर्घ्य जल पतनपात्र यानी तरभाणी में गिरा दें। अनन्तर पाद्य आदि यथा मिलित पूजा द्रव्यों का नाम लेकर सभी वस्तुओं से पूर्व क्रम से ही पूजा करे। अथवा दिव्यासन के मध्यभाग में **रां रामाय नमः** इस महामन्त्र से सर्वेश्वर श्रीरामजी का सर्वोपचारों से पूजा करे। तथैव श्रीरामजी के वामभाग में **श्रीं सीतायै नमः** इस मन्त्र से श्रीसीताजी की आवाहन तथा पूजा करे। यहां यह खयाल रखना चाहिये कि यदि आचमनी एक ही हो तो उसे शुद्ध जल से प्रक्षालन-धोकर ही अर्घ्यपात्र से पाद्यपात्र में तथा पाद्यपात्र से आचमन पात्र में डालना चाहिये। अलग-अलग पात्रों के लिए अलग-अलग आचमनी की व्यवस्था हो तो अति उत्तम।

तत उद्धरणीं शुद्धजलपात्रजलेन संप्रक्षाल्य ततस्तया पाद्यजलपात्रात् पाद्यजलमादाय तदेव वाक्यं समुच्चार्य पाद्यं समर्पयामीतिवदन् भगवतः पादौ प्रक्षाल्येव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे द्विः प्रक्षिपेत्। शुद्धजलपात्रस्थजलेनोद्धरणीं प्रक्षाल्य आचमनपात्रात्तज्जलमादाय तदेव वाक्यं समुच्चार्य आचमनं तस्मै समर्पयामीतिवदन् भगवतो मुखकमलसमीपे प्रदर्श्य तज्जलं पतनपात्रे त्रिः प्रक्षिपेत्।

पुनः शुद्धजल पात्र के जल से आचमनी को प्रक्षालन करके आचमनी से पाद्य जलपात्र से पाद्य जल लेकर **ॐ श्रीसीतासहितायाऽप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः** इसप्रकार बोलकर या पूर्वोक्त क्रम से श्रीरामजी तथा श्रीसीताजी के अलग-अलग उन-उन मन्त्रों का उच्चारण करते हुये भगवान् के श्रीचरणकमलों की प्रक्षालन की है ऐसी भावना करके पाद्यं समर्पयामि बोलकर श्रीचरणों में दृष्टि रखकर पतनपात्र में दो वार उस जल को गिरा दें। फिर शुद्ध जलपात्र के जल से आचमनी को प्रक्षालन करके आचमनी में आचमन पात्र से जल लेकर **ॐ श्रीसीतासहितायाऽप्रमेयकृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः** इसप्रकार बोलकर श्रीमुखारविन्द के समक्ष दृष्टि करके आचमनीय जल को भी श्रीमुखकमल के समक्ष करके मैं भगवान् को आचमन करा रहा हूँ ऐसी भावना कर "आचमनीयं समर्पयामि" ऐसा बोलते हुये आचमनीय जलको पतनपात्र में तीन वार गिरा दें।

Scanned by CamScanner

उद्धरणीं पूर्ववदेव प्रक्षाल्य शुभ्रवस्त्रेण हस्तकमलमुखकमलेसंमृज्य शाटिकोत्तराग्रेण पादौ च प्रत्येकं संमृज्य षोडशोपचारान् समर्पयामीति पुष्पाञ्जलिं प्रदाय उद्धरण्याः पूर्णकुम्भात्सलिलमुधृत्त्य क्षीरफलगुडपूर्णंध्यात्वा तदेव वाक्यं समुच्चार्य मधुपर्कं समर्पयामीति वदन् निवेद्य पतनपात्रे प्रक्षिप्य पूर्ववदुद्धरणीं प्रक्षाल्य पूर्ववदेवाचमनं प्रदाय शाट्या पूर्ववत्समृज्य स्नानार्थं पादुके समर्पयामीति पुष्पाञ्जलिं भगवते प्रदाय पूर्ववदेवार्घ्याद्युपचारान् प्रदाय स्नानशाटीं मनसाध्यात्वा तुलसीकाष्ठेन तद्वाक्योच्चारणपूर्वकम् दन्तधावनमाचरन्निव विभाव्य स्वहस्तं प्रक्षाल्य शुद्धजलपात्रतोयेन मन्त्रोच्चारणपूर्वकं गण्डूषं समर्पयामीति तज्जलं षट्कृत्वः पतनपात्रे प्रक्षिप्य पुनरपि तज्जलेन मुखशोधनम् समर्पयामीति मुखाम्बुजशोधनमाचरन्निव विभाव्य तज्जलं पतनपात्रे प्रक्षिप्य पूर्ववत्पाद्याचमने प्रदाय ताम्बूलं च प्रदाय अभ्यङ्गोद्वर्तनचूर्णं प्रदाय अभ्यङ्ग स्नानमाचरन्निव विभाव्यस्नानपात्रं मूर्ध्नि निधाय स्नानीयपात्रजलेन पुरुष सूक्तादिकमनुसंदधत् भगवन्तं स्नापयित्वा स्नानशाट्या संमृज्य सिंहासने स्थापयित्वा तद्वाक्येनैव गन्धपुष्पधूपदीपादिकं समर्पयामीति वदन्गन्धादिकम् भगवते समर्पयेत् ।

अनन्तर पहले के समान ही आचमनी को शुद्ध जल से प्रक्षालन कर स्वच्छ सफेद वस्त्र के एक भाग से भगवान् के हस्तकमल तथा मुखकमल पोंछने की भावना करते हुये मुखारविन्द तथा हस्तकमलों के सक्षम में समुपस्थापित करें । पुनः हाथ में तुलसी तथा पुष्पों को लेकर **ॐ श्रीसीतासहितायाप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः** इस मन्त्र को बोलकर **षोडशोपचारान् समर्पयामि** ऐसा बोलकर षोडशोपचार की भावना से श्रीचरणकमलों में पुष्पाञ्जलि समर्पण कर दें । अनन्तर आचमनी से पूर्ण कुम्भ से शुद्ध जल लेकर दूध फूल तथा गुड से पूर्ण है ऐसा ध्यान करे **ॐ श्रीसीतासहितायाप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामाय नमः** इसको बोलकर मधुपर्कं समर्पयामि ऐसा बोलकर पतनपात्र में गिरा दें । पुनः आचमनी को प्रक्षालनकर पूर्व के समान ही भगवान् को आचमन कराकर पहले के समान ही शुभ्रवस्त्र से हस्त कमल तथा मुखकमल चरणकमलों को पोंछने की भावनाकर वस्त्र को भगवान् के सम्मुख करे । अनन्तर हाथ में पुष्प लेकर भगवान् के स्नान के लिए पादुका का समर्पण करता हूँ ऐसी भावनाकर भगवान् के श्रीचरमों में पुष्पाञ्जलि

Scanned by CamScanner

समर्पण करे। तब पूर्व के समान ही अर्घ्य पाद्य समर्पण कर आचमन करा के स्नानार्थ शाटिका-पीताम्बर का मन से ही ध्यानकर पूर्व के समान ही मन्त्र का उच्चारण करके **दन्तधा वनं समर्पयामि** ऐसा बोलकर तुलसी काष्ठ से भगवान् को दन्तधावन करा रहा हूँ ऐसी भावना करके उस काष्ठ को पतनपात्र में रखकर अपने हाथ को धोकर शुद्ध जलपात्र से आचमनी से जल लेकर पूर्व के समान मन्त्र को बोलकर **गण्डूषं समर्पयामि** ऐसा बोलकर जल को छः वार पतनपात्र में गिरा दे।

पुनः आचमनी से शुद्ध जल लेकर पूर्व के समान ही मन्त्र को बोलकर **मुखशोधनं समर्पयामि** ऐसा बोलकर शुद्ध जल से मुखारविन्द प्रक्षालन की भावनाकर उस जल को पतनपात्र मे गिरा दे। पुनः अर्घ्यपाद्य आचमन कराने के वाद पूर्व के समान ही मन्त्र को पढकर **ताम्बूलं समर्पयामि** ऐसा बोलकर ताम्बूल समर्पण करने के वाद अभ्यङ्ग स्नान के लिए तेल तथा उवटन आदि हाथ में लेकर यह मानसिक भावना करके भगवान् के दिव्य अंगों में मैं सुगन्धित द्रव्यादि लगा रहा हूँ। इसके वाद अभ्यङ्ग स्नान सम्पादन करने की भावना से स्नान पात्र को मस्तक में स्थापितकर उस शुद्ध जल से **हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः** इत्यादि पुरुषसूक्त के मन्त्रों को पढते हुये भगवान् को स्नान कराकर स्नान शाटि-शुद्ध शुभ्रवस्त्र से अच्छी तरह से पोंछकर सिंहासन में विराजमान करा दे। अनन्तर **ॐ श्रीसीतासहितायाप्रमेय कृपारत्नाकराय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः** इस मन्त्र को बोलकर **गन्धं समर्पयामि** इसप्रकार बोल कर गन्ध का समर्पण करे। तथैव **पुष्पं समर्पयामि** बोलते हुये पुष्प तथा धूप-दीप नैवेद्य-ताम्बूल एला लवङ्ग-सुगन्ध द्रव्य आदि नामों को अलग-अलग बोलकर यथा मिलित सभी द्रव्य भगवान् को सादर समर्पण करे।

ततः पात्रावशिष्टजलेन श्रीं श्रियैः नमः लीं लीलायै नमः भूं भूम्यै नमः इति मन्त्रोच्चारणेनार्घ्यादिकं प्रदाय ततः ॐ किरीटाय मुकुटाधिपतये नमः अ०। ॐ दक्षिणकुण्डलाय मकरात्मने नमः अ०। ॐ वामकुण्डलाय मकरात्मने नमः अ०। ॐ वैजयन्तीमालायै श्रीतुलस्यै नमः अ०। ॐ वत्साय श्रीनिवासाय नमः अ०। ॐ कौस्तुभायरत्नाधिपतये नमः अ०। ॐ काञ्चीगुणोज्ज्वलाय दिव्यपीताम्बराय नमः अ०। ॐ सर्वेभ्यो भगवद् दिव्यविभूषणेभ्यो नमः अ०। इति भगवद्भूषणानि अर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत्।

पूर्वोक्त प्रकार से भगवान् की पूजा सम्पादन करने के वाद अर्घ्यादि पात्रों में

Scanned by CamScanner

बचे हुये जल से **श्रीं श्रियै नमः** इस मन्त्र को बोलकर श्रीदेवीजी की अर्घ्यादि सभी पदार्थों से पूजा करे। तथैव **लीं लिलायै नमः** इस मन्त्र को बोलकर लीलादेवी की और **भूं भूम्यै नमः** इस मन्त्र को बोलकर भू देवीजी की सभी अर्घ्यादि सामग्री से पूजा करे। पुनः **ॐ किरीटाय मुकुटाधिपतये नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यपाद्य आचमनीय स्नानीय गन्ध पुष्पादि से किरीट मुकुट की पूजा करने के वाद **ॐ दक्षिण कुण्डलाय मकरात्मने नमः** इस मन्त्र को बोलकर पहले के समान ही अर्घ्यादि सामग्री से दक्षिण कुण्डल की पूजा करके **ॐ वामकुण्डलाय मकरात्मने नमः** इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के ही तरह से ही वामकुण्डल की पूजा करे। तब **वैजयन्तीमालायै श्रीतुलस्यै नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि सभी वस्तुओं से वैजयन्ती माला की पूजा करने के वाद **ॐ श्रीवत्साय श्रीनिवासाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के समान ही सभी अर्घ्यादि से श्रीरामचन्द्रजी के वक्ष्यस्थल में स्थित सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के निवास स्थानभूत श्रीवत्स की पूजा करे। इसके वाद **ॐ कौस्तुभाय रत्नाधिपतये नमः** इस मन्त्र को बोलकर पहले के समान ही अर्घ्यादि समस्त सामग्री से श्रीरामजी का भूषण कौस्तुभमणि की पूजा सम्पादन करे। अनन्तर **ॐ काञ्चीगुणोज्ज्वलाय दिव्यपीताम्बराय नमः** इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के ही समान अर्घ्यादि सभी वस्तुओं से श्रीरामजी के दिव्य परिधान पीताम्बर की पूजा करें। इसके वाद **ॐ सर्वेभ्यो भगवद् दिव्यविभूषणेभ्यो नमः** इस मन्त्र को बोलकर पूर्व के ही तरह से समस्त अर्घ्यादि द्रव्यों से श्रीरामचन्द्रजी के समस्त दिव्य आभूषणों की एक ही साथ में पूजा करें।

ततोऽर्घ्याद्येकैकपात्रस्थ जलेन क्रमशः ॐशाङ्र्गाय सबाणाय चापाधि पतये नमः अर्घ्यानि समर्पयामि ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः अ०। ॐ पाञ्च जन्याय शंखधिपतये नमः अ०। ॐ कौमोदक्यै गताधिपतये नमः अ०। ॐ नन्द काय खड्गाधिपतये नमः अ०। इति भगवतो दिव्यायुधानि अर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत्।

पूर्वोक्त क्रम से भगवान् के दिव्य भूषणों के पूजन करने के वाद उन्हीं अर्घ्य आदि पात्रों के जल से **ॐ शाङ्र्गाय सबाणाय चापाधिपतये नमः** इस मन्त्र को बोलकर सर्वेश्वर श्रीरामजी के दिव्य आयुध बाण एवं धनुष का अर्घ्य आदि सभी द्रव्यों से पूजन करे अनन्तर **ॐ सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यपाद्यादि सभी सामग्री से भगवान् के दिव्य आयुध सुदर्शन चक्र की पूजा करे।

Scanned by CamScanner

इसी प्रकार से **ॐ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से पाञ्चजन्य शङ्ख की पूजा करे। पुनः **ॐ कौमोदक्यै गदधिपतये नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से गदा की पूजा करने के वाद **ॐ नन्दकाय खड्गाधिपतये नमः** इस मन्त्र को बोलकर खड्ग की अर्घ्यादि से पूजा करें।

ततस्तथैव ॐ लं लक्ष्मणाय नमः अ०। ॐ भं भरताय नमः अ०। ॐ शं शत्रुघ्नाय नमः अ०। ॐ हुँ हनुमते नमः अ०। ॐ सुं सुग्रीवाय नमः अ०। ॐ वं विभीषणाय नमः अ०। ॐ जं जाम्बते नमः अ०। ॐ नं नलाय नमः अ०। ॐ नीं नीलाय नमः अ०। ॐ गं गवाक्षाय नमः अ०। ॐ गं गवाय नमः अ०। ॐ कं केसरिणे नमः अ०। ॐ सं सुषेणाय नमः अ०। ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचर प्रभृतिभ्यो नमः अ०। इति भगवत्परिजनानर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत्।

सर्वेश्वर श्रीरामजी के दिव्य आयुध धनुष बाण आदि के पूजन के वाद पूर्वोक्त क्रम से **ॐ लं लक्ष्मणाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीलक्ष्मणजी की पूजा करे। **ॐ भं भरताय नमः** बोलकर अर्घ्यादि से श्रीभरतजी की पूजा करे। **ॐ शं भत्रुघ्नाय नमः** बोलकर अर्घ्यादि से श्रीशत्रुघ्नजी की पूजा करे। **ॐ हुं हनुमते नमः** बोलकर श्रीहनुमानजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ सुं सुग्रीवाय नमः** इस मन्त्र से श्रीसुग्रीवजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ वं विभीषणाय नमः** इस मन्त्र से श्रीविभीषणजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ जं जाम्बवते नमः** इस मन्त्र से श्रीजाम्बवन्तजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ नं नलाय नमः** इस मन्त्र से श्रीनलजी की अर्घ्यादि से पूजा करे **ॐ नीं नीलाय नमः** इस मन्त्र से श्रीनीलजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ गं गवाक्षाय नमः** इस मन्त्र से श्रीगवाक्षजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ गं गवाय नमः** इस मन्त्र से श्रीगवजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ कं केसरिणे नमः** इस मन्त्र से श्रीकेसरीजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ सं सुषेणाय नमः** इस मन्त्र से श्रीसुषेणजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचरप्रभृतिभ्यो नमः** इस मन्त्र से श्रीरामजी के सभी परिजन एवं परिचरों की अर्घ्यादि से पूजन करे। पूर्वोक्त विधि से भक्तिभाव युक्त होकर सर्वेश श्रीरामजी के सभी परिजन परिचरादि की अर्घ्य आदि से पूजन करे।

ततस्तथैव भगवतः पूर्वे ॐ ऋक्षराजाय नमः अ०। ॐ नीलाय नमः अ०। दक्षिणे ॐ सुग्रीवाय नमः अ०। ॐ नलाय नमः अ०। पश्चिमे ॐ शत्रुघ्नाय नमः

Scanned by CamScanner

अ०। ॐ अंगदाय नमः अ०। उत्तरे ॐ भरताय नमः अ०। ॐ विभीषणाय नमः अ०। भगवतोऽग्रे ॐ आञ्जनेनाय महाबलाय हुं हनुमते नमः अ०। भगवतः पृष्ठे ॐ लक्ष्मणाय नमः अ०। ॐ सर्वेभ्यो भगवद् द्वारपालेभ्यो नमः अ०। इति भगवतो द्वारपालानर्घ्यादिभिरभ्यर्चेत्।

पूर्वोक्त क्रम से परिजनादि की पूजा के वाद उसी प्रकार से भगवान् के द्वारपालों को पूर्वादि क्रम से पूजा करे **ॐ ऋक्षराजाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर भगवदपेक्षया पूर्व दिशा में अर्घ्यादि से श्रीऋक्षराजजी की पूजा कर तथैव **ॐ नीलाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि मे श्रीनीलजी की पूजा करे। पुनः **ॐ सुग्रीवाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर दक्षिण दिशा में अर्घ्यादि से श्रीसुग्रीवजी की पूजा करके **ॐ नलाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीनलजी की पूजा करे। फ़िर **ॐ शत्रुघ्नाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर पश्चिम भाग में अर्घ्यादि से श्रीशत्रुघ्नजी की पूजा कर **ॐ अंगदाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीअंगदजी की पूजा करे। पुनः **ॐ भरताय नमः** इस मन्त्र को बोलकर उत्तर दिशा में श्रीभरतजी की अर्घ्यादि से पूजा कर **ॐ विभीषणाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीविभीषणजी की पूजा करे। अनन्तर भगवान् के आगे **ॐ आञ्जनेयाय महाबलाय हुं हनुमते नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीहनुमानजी की पूजा के वाद श्रीरामजी के पीछे **ॐ लं लक्ष्मणाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीलक्ष्मणजी की पूजा करे। **ॐ सर्वेभ्यो भगवद् द्वारपालभ्यो नमः** इस मन्त्र को बोलकर भगवान् के सभी द्वारपालों की अर्घ्यादि से पूजा करे।

ततस्तथैव ॐ श्रीविघ्नेशाय नमः अ०। ॐ श्रीवाण्यै नमः अ०। ॐ श्रीदुर्गायै नमः अ०। ॐश्रीक्षेत्रपालाय नमः अ०। ॐ श्रीसूर्याय नमः अ०। ॐ श्रीचन्द्राय नमः अ०। ॐ श्रीनारायणाय नमः अ०। ॐश्रीनरसिंहाय नमः अ०। ॐ श्रीवासुदेवाय नमः अ०। ॐ श्रीवराहाय नमः अ०। ॐ श्रीइत्यङ्गदेवान् सम्पूज्य ॐ श्रीसीतायै नमः अ०। ॐ श्रीलक्ष्मणाय नमः अ०। ॐ श्रीहनुमते नमः अ०। ॐ श्रीभरताय नमः अ०। ॐ श्रीशत्रुघ्नाय नमः अ०। ॐ श्रीविभीषणाय नमः अ०। ॐ श्रीसुग्रीवाय नमः अ०। ॐ श्रीअंगदाय नमः अ०। ॐ श्रीजाम्बवते नमः अ०। ॐ श्रीप्रणवाय नमः अ०। इत्यङ्गमन्त्रान् प्रपूजयेत्।

पूर्वोक्त क्रम से द्वारपालादिकों की पूजा के वाद निम्न प्रकार से भगवान् के

Scanned by CamScanner

दश अंग देवताओं को पूजे **ॐ श्रीविघ्नेशाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से विघ्नेशजी की पूजा करे। **ॐ श्रीवाण्यै नमः** इस मन्त्र को बोलकर वाणी की अर्घ्यादि से पूजे। **ॐ श्रीदुर्गायै नमः** इस मन्त्र को बोलकर दुर्गाजी की अर्घ्यादि से पूजे। **ॐ श्रीक्षेत्रपालाय नमः** इस मन्त्र से अर्घ्यादि द्वारा क्षेत्रपालों की पूजा करे। **ॐ श्रीसूर्याय नमः** इस मन्त्र सो सूर्य की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीचन्द्राय नमः** इस मन्त्र से चन्द्र की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीनारायणाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर श्रीनारायणजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीनरसिंहाय नमः** इस मन्त्र से अर्घ्यादि द्वारा श्रीनरसिंहजी की पूजा करे। **ॐ श्रीवासुदेवाय नमः** इस मन्त्र से श्रीवासुदेवजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीवराहाय नमः** इस मन्त्र से अर्घ्यादि के द्वारा वराहजी की पूजा करे। इसप्रकार अंग देवताओं की पूजा करने के वाद श्रीरामजी के अंग मन्त्रों की निम्न रूपसे पूजा करे। **ॐ श्रीसीतायै नमः** इस मन्त्र को बोलकर श्रीसीताजी की अर्घ्यादि सभी सामग्री से पूजा करे। तथैव **ॐ श्रीलक्ष्मणाय नमः** इस मन्त्र से श्रीलक्ष्मणजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीहनुमते नमः** इस मन्त्र से अर्घ्यादि के द्वारा श्रीहनुमानजी की पूजा करे। **ॐ श्रीभरताय नमः** इस मन्त्र से श्रीभरतजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीशत्रुघ्नाय नमः** इस मन्त्र को बोलकर अर्घ्यादि से श्रीशत्रुघ्नजी की पूजा करे। **ॐ श्रीविभीषणाय नमः** इस मन्त्र से अर्घ्यादि के द्वारा श्रीविभीषणजी की पूजा करे। **ॐ श्रीसुग्रीवाय नमः** इस मन्त्र के द्वारा अर्घ्यादि से श्रीसुग्रीवजी की पूजा करे। **ॐ श्रीअंगदाय नमः** इस मन्त्र से श्रीअंगदजी की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ श्रीजाम्बवते नमः** इस मन्त्र से श्रीजाम्बवन्तजी की अर्घ्यादि से पूजा करके **ॐ प्रणवाय नमः** इस मन्त्र से प्रणव की अर्घ्यादि से अच्छी तरह प्रेमभावना युक्त होकर पूजा करे।

"अङ्गान् विना रामो विघ्नकरो भवति" ऐसा श्रीरामोपनिषद् में लिखा है अतः सर्वेश्वर श्रीरामजी के पूर्वोक्त विघ्नेश आदि दश अंग देवता तथा श्रीसीताजी आदि दश अंग मन्त्रों की पूजा सावधानी से सभक्तिभाव करना चाहिये। इसी ओर आचार्य श्री ने संकेत-प्रपूजयेत् लिखकर किया है। क्योंकि सांग पूजा के विना पूजा सफल नहीं होती है।

ॐ सर्वेभ्यो भगवद् गणाधिपेभ्यो नमः अ०। ॐ सर्वेभ्यो भगवत्पार्ष

Scanned by CamScanner

देभ्यो नमः अ०। सर्वेभ्यो भगवत्परिजनपरिचरेभ्यो नमः अ०। ॐ नीत्यै नमः अ०। ॐ मुक्त्यै नमः अ०। ॐ साङ्गसायुधसपरिवारसह्रीषीकायदिव्यमङ्गलमूर्तये नमः अ०।

पूर्व वर्णित क्रम से सर्वेश्वर श्रीरामजी के अंगों की पूजा करने के वाद पूर्वोदित क्रम से ही **ॐ सर्वेभ्यो भगवद् गणाधिपेभ्यो नमः** इसे बोलकर भगवान् के सभी गणाधिपों की अर्घ्यादि से पूजा करके **ॐ सर्वेभ्यो भगवत्परिजनेभ्यो नमः** इस मन्त्र से भगवान् के सभी परिजनों की अर्घ्यादि से पूजा करे। तब **ॐ नीत्यै नमः** इस मन्त्र से नीति की अर्घ्यादि से पूजा करे। **ॐ मुक्त्यै नमः** इस मन्त्र से अर्घ्यादि से मुक्ति की पूजा करे। अनन्तर **ॐ साङ्गसायुधसपरिवारसह्रिषीकाय दिव्यमङ्गल मूर्तये नमः** इस मन्त्र से भगवान् के अंगों आयुधों परिवारों परिकरों आदि तथा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के साथ दिव्य मङ्गल विग्रह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी की अर्घ्यादि उपचारों से पूजा करे।

अथेत्थं पूर्वोक्तैः सह भगवन्तं श्रीराममभ्यर्च्य अञ्जलिनापुष्पाण्यादाय-

अनन्तर पूर्वोक्त विधि से सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी की अंग आयुध परिवार परिकर तथा श्रीसीताजी के साथ पूजा करने के वाद अञ्जलि में पुष्पों को लेकर निम्न श्लोकों से प्रार्थनाकर श्रीचरणारविन्द में पुष्पाञ्जलि समर्पण करे-

सुरासुरेन्द्रादिमनोमधुव्रतैर्निषेव्यमाणाङ्घ्रिसरोरुह प्रभो ।
असंख्यकल्याणगुणामृतोदधे ? सुरेश ? रामाद्भूतवीर्यमापते ॥१॥

समस्त सुरासुर देव दानव इन्द्र प्रमुखों के मनरूपी भ्रमरों से सर्वदा सं सेव्यमान चरणरूपी कमलवाले सर्वसमर्थ हे प्रभु श्रीरामजी ? हे देवेश ? अत्यन्त अद्भूत लोकोत्तर चमत्कारी पराक्रमशाली सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी ? असंख्य अनन्त कल्याण गुणरूपी अमृत के महासमुद्ररूप हे श्रीरामजी ? आपके चरणों में अनेक वार सादर दण्डवत् प्रणाम है ॥१॥

अपारसंसारमहार्णवप्लवं पदाम्बुजं तं प्रणतार्तिनाशनम् ।
निषेव्यमाणं सगणैः शिवादिभिर्गतोऽस्म्यहं ते शरणं शरण्यम् ॥२॥

हे प्रणतार्ति नाशक श्रीरामजी ? अपार संसार रूपी महासमुद्र को पार करने के लिए सुदृढ नौका रूप आपके शरण में आकर प्रणाम-नमस्कार करनेवाले जनों के सर्व दुःखों को सर्वदा के लिए नाश करनेवाले तथा अपने समस्त गण परिजन और

Scanned by CamScanner

परिकरों के साथ श्रीशिवजी श्रीविष्णुजी और श्रीब्रह्माजी के द्वारा सर्वदा संसेव्यमान यानी निरन्तर सेवित शरण्य अर्थात् सवों के लिए शरण में आने योग्य या शरण में आये जीवों को सर्वदा के लिये अभय करदेनेवाले उन प्रसिद्ध तीनों लोकों को पवित्र करनेवाले सर्वसमर्थ आपके श्रीचरणरूपी कमलों के शरण में आया हूँ प्रभो ? संसार भय से त्रस्त मेरी रक्षा करें ॥२॥

विकचपद्मदलायतलोचनां प्रणतकामदुघाङ्घ्रिसरोरुहाम् ।
अशरणः शरणं जनकात्मजे प्रतिदिनं भवतीमनुचिन्तये ॥३॥

अच्छी तरह से विकशित खीले हुये कमल पत्र के समान विशाल तथा अति मनोहर नेत्र वाली तथा आपके शरण में आकर प्रणाम करने वाले जनों के सव कामनाओं को पूर्ण करनेवाले चरणरूपी कमलवाली और अशरण यानी अन्य रक्षक या आधार से रहित जीवों को सर्वदा शरण प्रदान करनेवाली हे जनकनन्दिनी सर्वेश्वरी श्रीसीताजी ? सवों को अभय करनेवाली आपको मैं प्रतिदिन सादर चिन्तन यानी स्मरण के साथ नमन करता हूँ ॥३॥

मणीन्दुगर्भं मुकुटाधिनाथं श्रीमत्किरीटं मणिकुण्डले च ।
श्रीकौस्तुभादिनि च दिव्यभूषणान्येतानि नित्यं प्रणमामि विष्णोः ॥४॥

मणिरूपी चन्द्रमा है गर्भ-बीच भाग में जिसके ऐसे मुकुटों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी के मुकुट सम्पूर्ण शोभा से युक्त श्रीरामजी का किरीट तथा मणियों से शोभित दिव्य कुण्डल और दिव्य श्रीकौस्तुभमणि आदि समस्त दिव्य आभूषणों को सर्वदा प्रणाम करता हूँ ॥४॥

प्रत्यूहव्यूहभङ्गं विदधदुरुबलशक्तिमान्सर्वकरी
भूरिश्रेयः प्रतापोमुनिवरनिकरैः स्तुयमानो विमानः ।
रक्षोदैत्यादिनाशी क्षुभितजलनिधिर्लोकजिल्लोकमान्यो
धन्योनोमङ्गलौघंसपदिसुकुरुताद्रामशस्त्रासङ्गः ॥५॥

अति वेगवाला तथा महा सामर्थ्य से युक्त अघटित घटना आदि सव कुछ करने में सर्वदा समर्थ और अत्यन्त श्रेष्ठ तथा प्रतापी तथैव सर्वदा अभिमान से रहित और राक्षस तथा दैत्यादि समूहों का नाश करनेवाला सर्वदा मननशील मुनिओं से अहर्निश संस्तुत तथा अति अगाध समुद्र को अपने अलौकिक तेज से क्षुभित करनेवाला और सर्वलोकों को जितने वाला एवं सर्वलोक संमान्य तथा अति धन्य यानी सर्वविजयादि

Scanned by CamScanner

ऐश्वर्य सम्पन्न सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी का अस्त्र तथा शस्त्र (जिसको मन्त्र के विना चलाया जाता है उसे शस्त्र कहा जाता है जैसा बाण खड्ग आदि। मन्त्र प्रयोग पूर्वक जिसका प्रयोग किया जाता है उसे अस्त्र कहते हैं। जैसे ब्रह्मास्त्र आग्नेयास्त्र आदि) समूह है वह अति शीघ्र ही मेरे विघ्न समूहों का विनाश करता हुआ समस्त मङ्गल सम्पादन करे ॥५॥

श्रीरामकैङ्कर्यपरायणम्मुर्हुमुहुश्च सीतेशनिदेशकारिणम् ।
तमेकवीरं शरदिन्दुकीर्तिं नमाम्यहं लक्ष्मणमप्रमेयम् ॥६॥

सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के कैङ्कर्य सेवा में सर्वदा तत्पर तथा बारम्बार किसी भी प्रकार के सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी के आज्ञाओं को परिपालन करनेवाले शरदकालिन चन्द्रमा के समान स्वच्छ कीर्तिवाले अनन्य वीर अतिपराक्रमि शूर वीर बल तथा शौर्यादि में अन्य उपमा रहित उन प्रसिद्ध वीर श्रीलक्ष्मणजी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥६॥

महाबलं वायुसुतं महामतिं प्रतप्तचामीकरचारुलोचनम् ।
श्रीरामपादाब्जनिविष्टमानसं द्विडन्तकं श्रीहनुमन्तमीडे ॥७॥

सन्तप्त अति तपाये हुये सोने के समान अति सुन्दर नेत्रवाले अति बलशाली और महाबुद्धिशाली तथा श्रीरामचन्द्रजी के चरणरूपी कमलों में सर्वदा सन्निवेषित मनवाले और उपासक के शत्रुओं का नाश करनेवाले वायुदेव के पुत्र सर्वैश्वर्य सम्पन्न श्रीहनुमानजी की प्रर्थना यानी स्तुति करता हूँ ॥७॥

सुग्रीवमुख्यान्परितोचनान्प्रभोः सद्वारपालान्नलनीलमुख्यान् ।
गणाधिपान्देववरस्यविष्णोर्नमाम्यहं नित्यमशेषपार्षदान् ॥८॥

सर्व व्यापक तथा देवश्रेष्ठ सर्व नियमन शील श्रीरामचन्द्रजी के श्रीसुग्रीव प्रभृति सर्वदा सान्निध्य प्राप्त परिजन तथा सभी द्वारपालों के साथ श्रीनलनील प्रमुख द्वारपालों और समस्त गणाधिपतिओं के साथ श्रीरामचन्द्रजी के नित्य पार्षदों को मैं नित्य ही नमन सादर प्रणाम करता हूँ ॥८॥

हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्मानि प्रथमान्यासन् ।
तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥९॥

सिद्ध संकल्प देवों ने यज्ञ से यानी याग के साधन रूप संकल्प से अथवा पूर्वोक्त सामग्री से यज्ञ को अर्थात् सर्वत्र व्यापक रूपसे स्थित श्रीरामरूप विष्णु को

Scanned by CamScanner

"**यज्ञो वै विष्णुः**" इस श्रुति से और "**यज्ञोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्**"। "**सर्वं विष्णुमयं जगत्**" इत्यादि स्मृतियों से उस यज्ञ में पूजित किया उन लोगों से आचरित देवाराधनादिक ही अन्य धर्मों के अपेक्षा श्रेष्ठ सनातन श्रीवैष्णवधर्म के रूपमें प्रचलित हुये। जो आज भी विश्व का सर्व श्रेष्ठ धर्म के रूपमें मानव को मार्ग बता रहा है। वे पूर्वोक्त रीति से यजन करनेवाले परमपद श्रीसाकेत लाभात्मक नाक सर्व पापरहित श्रीअयोध्याजी को निश्चय रूपसे प्राप्त किये हैं। जिस दिव्य धाम में प्राचीन साध्य आदि देवलोग अर्थात् नित्यमुक्त श्रीहनुमानजी आदि नित्यपार्षद विराजमान हैं ॥९॥

जगत्पतेः ? श्रीश ? जगन्निवास ? प्रभो ? जगत्कारण ? रामचन्द्र ?।
नमोनमः कारुणिकाय तुभ्यं पादाब्जयुग्मेतवभक्तिरस्तु ॥१०॥

हे जगत्पति श्रीसीतानाथ ? हे जगन्निवास ? हे सर्वजगत्कारण भगवान् श्रीराम ? हे दया सागर श्रीराम ? आपके चरणों में मेरा शतशः नमस्कार हो तथा आपके पादपद्म युग्म में सदा मेरी भक्ति बनी रहे ॥१०॥

मनोमिलिन्दस्तवपादपंकजे रमार्चिते संरमतां भवे-भवे।
यशः श्रुतौ ते मम कर्णयुग्मकं त्वद्भक्तसंगोऽस्तु सदा मम प्रभो ? ॥११॥

हे भगवान् श्रीरामचन्द्रजी ? मेरा अन्तःकरण रूप भ्रमर मधुपान कर्ता जन्तु विशेष सकल शौभाग्यवती श्रीसीताजी से समादृत आपके पद युगल में सर्वदा रमित होता रहे। तथा मेरे दोनों कर्णेन्द्रिय आपके यश कीर्ति को सुनने में संलग्न रहे और आपके जो अनन्य भक्त हैं उनके साथ हमारा सत्संग होता रहे। अर्थात् मैं भक्तों के साथ ही वार्तालाप करता रहूँ ॥११॥

इत्यभिष्टुवन् पुष्पाञ्जलिं सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रपदारविन्दे समर्प्य→

इसप्रकार से श्रीरामजी की प्रार्थना करते हुये पुष्पाञ्जलि सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के श्रीचरण कमलों में समर्पण करके-

उरः शिरोदृष्टिमनोवचः पदद्वयप्रराजत्करयुग्मजानुभिः।
कङ्कैः क्षितौ तं प्रणमेदथाष्टभिर्दीर्घं तथैते कृतधीश्च दण्डवत्।
इतिसाष्टाङ्गदण्डवत् प्रणामं कुर्यात्।

पूर्वोक्त क्रम से भगवान् की प्रार्थना करने के वाद प्रणाम करने का प्रकार-नियम बतलाने के लिए आचार्य श्री कहते हैं उरः इति सर्वेश्वर परमकारण रूपसे स्थित श्रीरामचन्द्रजी को प्रणाम करने के लिए निश्चित बुद्धिवाले महापुरुष मन वचन दोनों पैर

Scanned by CamScanner

दोनों जानु घुटना छाती शिर मस्तक नेत्रयुग तथा फैलाया हुआ दोनों वांह-हाथ इन आठों प्रकार के अंगों से पृथिवी में दण्ड की तरह लेटकर-गिरकर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी को सभी भक्त लोग सादर दण्डवत् प्रणाम करे। इसप्रकार सर्वेश्वर श्रीरामजी को साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करे। अनन्तर राजभोगादि के लिए निम्न प्रकार से व्यवस्था करे।

अथ महानैवेद्य समये पात्राणि प्रक्षाल्य पूर्ववत्पूर्णकुम्भजलेन पात्राणि पूरयित्वा भोज्याशनार्थं पादुके प्रसार्यार्घ्यादिभिरभ्यर्च्य मधुपर्कं च प्रदाय भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य पुरस्ताच्छुचिप्रदेशे यथाशक्तिसम्पादितं चतुर्विधं भोज्यादीन्युपहृत्य-

पूर्वोक्त विधान से पूजा प्रणामादि के अनन्तर राजभोग के समय में पूजा पात्रों को प्रक्षालन कर पूर्व के समान ही पूर्णकुम्भ के जल से पात्रों को भरकर भोजन करने जाने के लिए पादुका को आगे करके पूर्व प्रदर्शित विधान से पाद्य अर्घ्य आचमनीय आदि से पूजाकर मधुपर्क समर्पण करें। अनन्तर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के समक्ष अति पवित्र किये गये स्थान में यथा विधि यथा शक्ति सम्पादित चतुर्विध चार प्रकार के लेह्य पेय चर्व्य चोस्य एवं भोज्य विशुद्ध सामग्री को अति आदर के साथ रखकर निम्न प्रकार से प्रार्थना करें→

दोषाकरं नीचमथाल्पशक्तिं चैतन्यहीनं त्वशुचिं त्वनर्हम् ।
त्वद्भृत्यकर्मण्यपराधभाजनम्परं दुरात्मानमितीत्थमेव ॥१॥
सुचिन्तयन्मामपि मत्समर्पितमशेषपापापहनामधेय ? ।
उपेक्षितं त्वच्चरणावलम्बिनं न चार्हसि त्व[illegible]शराघव ? ॥२॥

शरणागत जीवों के सम्पूर्ण पापों के नाश क[illegible] प्रसिद्ध "**पतित पावन सीताराम**" ऐसे नाम से जगविख्यात श्रीरामजी ? आदर के साथ पवित्रतया मेरे द्वारा समर्पित नैवेद्य को आप स्वीकार करें तथा अनन्त दोषों का भण्डार नीच वृत्तिवाला और अति अल्पशक्ति वाला और तथ्यातथ्य विवेक से रहित अपवित्र तथा आपके कैङ्कर्य में अयोग्य सव जन कल्याणकारी आपके उद्देश्य से कर्म न करने से अपराध के पात्र बने अत्यन्त दुरात्मा से युक्त ऐसे ही अन्य अनन्त अवगुणों से लिप्त है ऐसा विचार कर हे जगदीश्वर सर्वेश्वर श्रीराघवजी ? आपके दिव्य चरणों के अवलम्बन किये मेरी भी उपेक्षा न करें ॥१/२॥

कौशल्याजनकात्मजावरगुणश्रीलक्ष्मणैरर्पितं
पंपायां शवरीसर्पितमहो दिव्याद्भुतस्वादकम् ।

Scanned by CamScanner

भारद्वाजसमर्पितं च सरसं क्षीरं व्रजे यत्स्वयं
यद्धैयङ्गवमर्जितं सहघृतं यद्यज्ञपत्न्यर्पितम् ॥३॥
अन्यैर्मुक्तजनैः कुचैलविदुराद्यैरर्पितं त्वत्प्रियं
पथ्यं पाकविशेषसंयुतमथो दृष्टिप्रियं राघव ? ।
रुच्यं दोषविवर्जितं सह यथाऽशेषः प्रभो ? भोक्तृभिः
स्वीकर्तुश्च तथार्हसि त्वमधुना भक्त्यार्पितं ते मया ॥४॥

हे राघव ? रघुकुल शिरोमणि श्रीरामजी ? आपने श्रीकौशल्याजी श्रीजनक नन्दिनी श्रीसीताजी सर्वश्रेष्ठ गुणों से युक्त श्रीलक्ष्मणजी से सादर सस्नेह समर्पित नैवेद्यादि तथा पंपा में शवरी द्वारा सस्नेह समर्पित लोकोत्तर दिव्य अद्भूत स्वादवाले फलादि तथैव श्रीभरद्वाज मुनिजी से सादर समर्पित अति रस वाले फलादि तथा स्नेही व्रजवासी जनों से समर्पित सुस्वादु दूध वह अद्भूत स्वाद वाला ताजा नवनीत-मख्खन और उन स्नेही यज्ञ पत्नीयों से सादर समर्पित ताजे घी से सम्पृक्त विविध भोज्य पदार्थ तथैव अन्य अनेक मुक्तजनों और साधारण स्थिति में रह रहे श्रीविदुरजी तथा उनकी धर्मपत्नी से सस्नेह समर्पित आपको अतिप्रिय अनेक प्रकार के पाक से युक्त नाना प्रकार के वानगी जो पथ्य तथा देखने में अति सुहावने थे तथैव रूचिकर और सव प्रकार के दोषों से रहित थे उन सवों को आपने अपने समस्त सेवकों दिव्य पार्षदों के साथ जैसे सस्नेह स्वीकार किया प्रभो ? सर्व समर्थ श्रीरामचन्द्रजी ? आज मेरे द्वारा आपको भक्ति पूर्वक सादर समर्पित इन भोज्य नैवेद्यादि को भी उसी प्रकार स्वीकार कर इस अबोध आपके शरणापन्न बालक को कृतार्थ करें ॥३-४॥

हरिः ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां२ऽअकल्पयन् ॥५॥

इस प्रकार विनम्र भाव से प्रार्थना कर पुनः सर्वकारणभूत सर्वेश्वर आपके ही नाभी से अन्तरिक्ष आकाश उत्पन्न हुआ तथा शिर से द्यौ लोक तथा भूमि पावों चरणों से और दिशायें कान से उत्पन्न हुये हैं यानी पूर्वोक्त क्रम से ही विश्वरूप आप से ही आकाशादि सभी लोक स्थावर जंगमादिक सव प्रपञ्च उत्पन्न हुआ है अतः विश्वरूप आपको आपकी ही सामग्री सादर समर्पण कर रहा हूँ उन्हें स्वीकार करें ।

इति विज्ञाप्यार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य श्रीमन्त्रराजेनाभिमन्त्र्य सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य श्रीरामं जनकात्मजामनिलजमित्यादिगुस्मरम्परामनुसन्धाय निवेदयेत् ।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार नैवेद्यों को स्वीकार करने के लिए सादर निवेदन कर अर्घ्य जल से प्रोक्षण कर अनन्तर षडक्षर श्रीमन्त्रराज से अभिमन्त्रित कर सुरभि मुद्रा दिखाकर श्रीरामजी से लेकर अपने आचार्य पर्यन्त के गुरु परम्परा का स्मरण कर नैवेद्य निवेदन करे ।

ततो जलपानहस्तशोधनगण्डूषपाद्याचमनादिभिरभ्यर्च्य→

अनन्तर सर्वेश श्रीरामजी को जलपान कराना हाथ प्रक्षालन गण्डूष कराना और आचमन कराना तथा श्रीचरण प्रक्षालन आदि प्रभृतियों से पूजा करके→

श्रृणोमि सीतापतिचित्रसत्कथां वदमि सीतापतिकीर्तिमक्षयाम् ।
स्मरामि सीतापतिदिव्यविग्रहं वृणोमि सीतापतिभक्तिमुत्तमाम् ॥१॥

मैं अन्य लौकिक विषयों से विरत होकर सर्वेश्वर श्रीसीतापति श्रीरामजी की सव वेदों से अतिअद्भूत रूपसे वर्णित भवपाश नाशक कथा को सर्वदा सुनाता हूँ तथा श्रीसीतापति की ही अक्षय कीर्ति श्रीरामजी के दिव्य कथा प्रसङ्गों को सर्वदा गान करता हूँ। तथैव श्रीसीतानाथ श्रीरामचन्द्रजी के दिव्य सर्वलोकोत्तर सुन्दर श्रीविग्रह का सर्वदा स्मरण करता हूँ और सर्वजन शरण्य श्रीसीतापति श्रीरामजी की सर्वोत्कृष्ट भक्ति को ही वरण यानी स्वीकार करता हूँ जो सर्वजनों को सायुज्य मुक्तिदायक है अन्य की भक्ति नहीं क्योंकि अन्य देव संर्वदा के लिये सव जीवों को सव जीवों या दुःखों से अभय प्रदान करने में समर्थ नहीं हैं ॥१॥

व्रजामि सीतापतिदिव्यमन्दिरं तथा च सीतापतिसत्प्रपन्नताम् ।
युनज्मि सीतापतिचिन्तनेमनः तनोमि सीतापतिदासङ्गतिम् ॥२॥

मैं अन्य विषयोन्मुखता को छोडकर सर्वदा श्रीसीतापति श्रीरामजी के दिव्य मन्दिर के तरफ ही जाता हूँ तथा मनुष्य देह की सफलता के लिये श्रीसीतापतिजी की शरणागति को सर्वतोभाव से स्वीकार करता हूँ। तथैव श्रीसीतापतिजी के चिन्तन में मन को सदा लगाये रखता हूँ। और श्रीसीतापतिजी के दास अनन्य सेवक सव भक्तों के साथ संगति को अधिक से अधिक बढाया करता हूँ यानी श्रीरामजी के दासों की संगति सदा किया करता हूँ अन्यों की नहीं ॥२॥

अवैमि सीतापतिमञ्जुबन्धुतां तथा च सीतापतिदिष्टभोग्यताम् ।
ततश्चसीतापतिनित्यधामदां करोमि सीतापतिभक्तिमुत्तमाम् ॥३॥

मैं सीतापतिजी के मञ्जु सुन्दर या दृढबन्धुता को स्वीकार करता हूँ। अथवा

Scanned by CamScanner

श्रीसीतानाथजी ही मेरे एक मात्र अनन्य बन्धु हैं इस बात को मैं अवगम करता हूँ। तथा श्रीसीतानाथजी के द्वारा निर्दिष्ट भोग्य पदार्थ को ही भोगता हूँ यानी मेरे कर्मानुसार मेरे लिये भोग्यतया समुपस्थित पदार्थों को श्रीराम शेष बुद्धि से यथायोग्य उपभोग करता हूँ। तथैव श्रीसीतापतिजी के नित्यधाम श्रीसाकेत को देनेवाली श्रीसीताजी श्रीरामजी की सर्वोत्कृष्ट भक्ति-शरणागति-सर्वाभयप्रद प्रपन्नता को स्वीकार करता हूँ ॥३॥

करोमि सीतापतिपाददासतां नमामि सीतापतिपादपङ्कजम् ।
पठामि सीतापतिकाव्यसंहतिं जपामि सीतापतिमन्त्रभूपतिम् ॥४॥

मैं अन्य सामान्य जनों की या देवों की दासता को छोडकर श्रीसीतापतिजी के श्रीचरणकमलों की दासता को स्वीकार करता हूँ और श्रीसीतापतिजी के चरणकमलों को ही सर्वदा नमन सादर दण्डवत् प्रणाम करता हूँ, तथैव श्रीसीतापतिजी के दिव्य गुणसम्पन्न काव्यसमूहों को ही सदा पाठ करता हूँ, और श्रीसीतापतिजी के महामन्त्र मन्त्रराज षडक्षर महामन्त्र को ही एक चित्ततया सदा जपता हूँ, अन्य मन्त्र का नहीं, क्योंकि अन्य मन्त्र चित्त में भ्रम पैदा करनेवाले हैं निश्चित रूपसे मोक्षदायक नहीं मोक्ष ही जीवात्मा का चरमलक्ष्य है अतः सायुज्य मुक्ति प्राप्ति के लिये सदा श्रीराम षडक्षर महामन्त्र को ही जपता हूँ ॥४॥

करोमि सीतापतिविग्रहार्चनं तथा च सीतापतिमूर्तिदर्शनम् ।
गुणाब्धिसीतापतिनामकीर्तनं परेशसीतापतिपादवन्दनम् ॥५॥

मैं सर्वदा श्रीसीतापतिजी के दिव्य श्रीविग्रह का पूजन किया करता हूँ, तथैव श्रीसीतापतिजी के सर्वमङ्गल कारक दिव्यमूर्ति का दर्शन सर्वदा किया करता हूँ, और सर्वगुणों के सागर श्रीसीतापतिजी के सर्व अमङ्गलों को अपहरणकर जप करनेवालों को सव प्रकार के मङ्गलों का प्रदान करनेवाले दिव्य नामों का संकीर्तन रात दिन किया करता हूँ। तथा सर्वेश्वर श्रीसीतापतिजी के लोक कल्याण कारक श्रीचरणकमलों की वन्दना सदा किया करता हूँ जिन श्रीचरण की धूली के स्पर्श मात्र से अघरूपा गौतम नारी का उद्धार हुआ तथा जिनके चिन्तन से अनन्त पतितों का कल्याण हुआ उन पादपद्मों की सदा वन्दना करता हूँ ॥५॥

भजामि सीतापतिमेवकेवलं रटामि सीतापतिमेव केवलम् ।
श्रयामि सीतापतिमेव केवलं प्रयामि सीतापतिमेव केवलम् ॥६॥

Scanned by CamScanner

मैं केवल श्रीसीतापतिजी का ही भजन यानी सेवा करता हूँ अन्यों का नहीं, तथैव श्रीसीतापतिजी के दिव्य नामों का ही रटन करता हूँ अन्य नामों का नहीं और सर्वाश्रय दाता श्रीसीतापतिजी का ही आश्रय लेता हूँ अन्यों का नहीं, तथा सर्वशरण्य श्रीसीतापतिजी के तरफ ही जाता हूँ अन्यों के तरफ नहीं जाता हूँ ॥६॥

इत्याद्यनन्यतावेदनस्तोत्रपुरुषसूक्तादिकं पठन् प्रदक्षिणनमस्कारादिभिः संपूज्य भगवन्तं श्रीसीतासमेतं श्रीरामचन्द्रं पर्यङ्केनिवेश्य-

इत्यादि जगद्गुरु श्रीगङ्गाधराचार्य प्रणीत अनन्यतावेदन दिव्य स्तोत्र तथा पुरुषसूक्त आदि को पढता हुआ श्रीरामजी की प्रदक्षिणा तथा नमस्कारादि से अच्छी तरह पूजा करके श्रीसीताजी के साथ भगवान् श्रीरामजी को पर्यङ्क में सन्निवेश करके निम्न प्रकार से प्रार्थना करे-

पर्यङ्कासनमारुह्य सीतया सहित प्रभो ? ।
निद्रां कुरुस्व भगवन् ? पार्षदैरभिरक्षितः ॥१॥

इति प्रार्थयन् निम्नाष्टकं गायन् शाययेत् ।

षडैश्वर्य परिपूर्ण सर्व समर्थ सर्वेश्वर श्रीरामजी ? स्वच्छ स्फटिक सन्निभपर्यंकासन दिव्य पलंग पर समारोहित होकर श्रीसीताजी के साथ श्रीहनुमदादि पार्षदों से अभिरक्षित होकर आराम करें यानी सुखनिद्रा का अनुभव करें ।

इसप्रकार से प्रार्थना करते हुये निम्न श्रीरामदोलिका शयानाष्टक का मधुर स्वर से गान करता हुआ श्रीरामजी को सुलावे ।

माता गीत्वा स्वपुत्रं यदि शयनगतं संविधत्तेऽथ शेषिन् ?
शेषत्वात्साम्यतत्वं गतवत इह मे कौशलाधीशजायाः ।
वात्सल्यातुल्यपात्रं स्वमिहि गुणगणोदारगीतेन गीतो
देहे सौधेऽतिशुद्धे भजनकलनतः स्वान्तदोलाऽधिशायी ॥१॥

पालना में बालक माता का गीत सुनते-सुनते सो जाते हैं । अथवा गीत गाकर माता बच्चे को सुलाती है ऐसा अनुभव है इसलिये समस्त जगत् का प्रयोजन होने के कारण हे शेषिन् मैं तथा श्रीकौशल्याजी दोनों का एक मात्र आपके अधिन होने से शेष रूपसे अभेद होने के कारण मेरे तथा श्रीकौशल्याजी के अनुपम दुलारे श्रीरामजी भजन के कारण अत्यन्त निर्मल सुधाधवल प्रसादरूपी मेरे देह में मेरे मनरूपी दोला पर लेटे हुये तथा गुणगण कीर्तन के गीत सुनते-सुनते सो जायें यानी

Scanned by CamScanner

मेरे मन में स्थिररूप से वास करें ॥१॥

कौशल्या कीर्तिधन्या यदुदरजनिमागाज्जगद्यत्तनुः स
श्रीरामो रावणस्याऽप्युपवनशिरसां कर्तितैकेषुणाद्राक् ।
जामाताऽन्वर्थनाम्नो नृपतिकुलमणेर्यो विदहस्य कुर्यात्
स्वापं दोलां श्रितो ह्न् मम दशरथसूर्भक्तिगङ्गाम्बुधौतम् ॥२॥

वह कौशल्या अपनी कीर्ति से धन्यवाद का पात्र हैं क्योंकि स्थूल सूक्ष्मचिद चिदात्मक यह संसार जिसका शरीर है, ऐसा श्रीरामजी ने जिसके उदर से अवतार-जन्म लिया था । इससे बडी कीर्ति और क्या हो सकती है । वे श्रीरामजी जिन्होंने एक ही बाण से अत्यन्त लघुता से रावण के दश मस्तकों को काट दिया था तथा विदेह कहे जानेवाले राजाओं के कुल में श्रेष्ठ ऐसे विदेह के जो जामाता हैं ऐसे श्रीरामजी श्रीदशरथजी के पुत्र मेरे भक्तिरूपी गङ्गाजल से पवित्र ऐसे हृदयरूपी दोला पर रहनेवाले निद्रा को प्राप्त करें अर्थात् भक्ति से भरे मनमें सदा वास करें ॥२॥

नीलाभो नीलापद्मोद्भवकृतजगतीनाथ ? सीताधिनाथः
सद्भिर्भोग्योऽपि भोग्यं ननु निखिलमिदं यस्य लीलाधृताङ्गः ।
धन्वोन्मुक्तेषुणाऽब्जच्छदमिव सितवां स्ताटकोरः परेशो
भक्तिक्षीराब्धिशेषं सदपि मम मनोदोलिकांसोऽधिशेताम् ॥३॥

अपने नाभि कमल से उत्पन्न हुए ब्रह्माजी के द्वारा उत्पन्न किये गये जगत् के स्वामी हे श्रीरामजी ? नीलकान्ति वाले तथा श्रीसीताजी के प्राणेश्वर आप सज्जनों के सेवनीय हैं । पुनश्च यह सम्पूर्ण संसार आपकी लीला का विषय होने से आपका भोग्य है । आपने ताडका की छाती को धनुष से दोडे गये बाण से कमल के पत्ते के सदृश सरलता से ही काटा था । आप ही परमेश्वर हैं इसप्रकार जगत के कर्ता तथा पालक एवं दुष्ट का निग्रह करनेवाले आप भक्तिरूपी क्षीरसागर में शेषनागरूपी मेरे मनकी दोला पर शीघ्र ही सो जायें ऐसी मेरी प्रार्थना है यानी आप शेष शैय्या के समान ही मेरे मन में सदा निवास करें ॥३॥

राज्यं दत्त्वाऽनुजायाऽतिविपुलविलसच्छ्रीसमिद्धं निरीहो
वक्ष्यस्वीवीरलक्ष्मी वसतिरनुपमोदारकीर्तिर्निरर्तिः ।
अव्राजील्लक्ष्मणेनाऽतिगहनविपिनं भक्तिभाजाऽनुजेना
ऽऽशेतां दोलां वरेण्यो मम हृदयकृतां सज्जनानां शरण्यः ॥४॥

Scanned by CamScanner

विशाल छाती वाले तथा वीर के सभी गुणों से युक्त श्रीरामजी निष्काम होने के कारण विशाल एवं समृद्ध राज्य अपने छोटे भाई श्रीभरतजी को देकर अतुल एवं महान् कीर्ति से शोभित तथा किसी प्रकार की पीडा को मन में नहीं रखते हुये छोटे भाई तथा परम भक्त ऐसे श्रीलक्ष्मणजी के साथ अत्यन्त भयङ्कर वन में गये वे सज्जनों के रक्षक पुरुषोत्तम श्रीरामजी मेरे मनमें बनाये पालना में ही रहने का विचार करें ऐसी मेरी उनसे प्रार्थना है, ऐसे पुरुषोत्तम श्रीरामजी में ही मेरा मन सदा लगा रहे ॥४॥

साकेतोशी विमातुर्वचनकरवरो ज्ञानिनामग्रभूमिः
पौरैर्मित्रैस्तथान्यैरनुगमनकरैर्दण्डकां साकमासः ।
शेषाणां तन्मुनीनां परमहितकृते दिव्यभैषज्यतुल्यो
दोलायां स्वापमेयाद्रघुकुलतिलकोमानसे मे स रामः ॥५॥

रघुकुल के तिलक समान साकेतपुर के स्वामी तथा ज्ञानियों का आलम्बन स्वरूप तथा विमाता के आज्ञाकारियों में श्रेष्ठ होने के कारण विमाता की आज्ञा से दण्डक नामके वन में वहाँ के परम भक्त मुनियों के परम कल्याण का साधन करने के लिए दिव्य औषध के तुल्य ऐसे श्रीरामजी अनुगमन करते हुये नगर के मित्र तथा अन्य जनों के साथ ही पहुँचे थे । ऐसा अलौकिक विनय से सम्पन्न तथा अप्रतिम भक्तवत्सल श्रीरामजी मेरे मनरूपी पालने में शयन करें और मेरा मन सर्वदा उनके ध्यान में ही मग्न रहे ॥५॥

सुग्रीवायाऽधिराज्यं ददद‌भिनवकाऽब्दच्छविर्वालिकालः
पाशवारेऽप्यपारे गिरिवरनिकरैर्बद्धसेतुर्विभुर्यः ।
प्राकारैः प्रावृत्तां तां दशमुखनगरीं ध्वंसिता ध्यानगम्यो
दोलां चेतोऽधिशेतां मम सकलकलोध्वन्विनां ग्रामणीः सः ॥६॥

जो श्रीरामजी नवीन मेघ के समान कान्ति वाले हैं, धनुर्धरों में मुख्य हैं, जो वालि के लिए यमराज समान हैं तथा सुग्रीव को विशालराज्य देनेवाले हैं । तथा जिन्होंने पर्वतों के समूहों से अपार समुद्र में सेतु बाँधा था, तथा जिन्होंने राक्षसों से सुरक्षित ऐसी रावण की राजधानी लंका का नाश किया था, ध्यान से जानने योग्य सभी कलाओं से युक्त एवं सर्वत्र व्यापक ऐसे वे श्रीरामजी मेरे मनरूपी पालने में शयन करें ॥६॥

लोकाक्ष्या सेचनाढ्यातुलबलवपुषा राजमानोविमानैः
प्रोन्मीलन्नीलपङ्केरुहवदनघनश्यामधामाभिरामः ।

कोदण्डेनेषुणा चोल्लसितकरकजः श्रीविशालः सुमाल

श्चित्ते स्वापं प्रमेयादहितविहतिकृद्दोलिकायां स रामः ॥७॥

जिनके दर्शन में लोगों के नेत्र कभी तृप्त नहीं होते ऐसे तथा अतुल बल से युक्त शरीरवाले निरभिमानी विकसित नील कमल के समान श्याम वर्ण से मनोहर धनुष तथा बाण से शोभित करकमलवाले उत्तम माला से बिभूषित सभी प्रकार के अतिशयों से युक्त दुष्टों के निग्रह करनेवाले श्रीरामजी मेरे चित्त रूपी पालने में शयन करें ॥७॥

वीराणामग्रणीर्यः सुरदनुजनृणां जन्मिनां चेतरेषां

कर्तापाताऽथहर्ता समविरुदयुतो हेयहीनोऽप्यहीनः ।

स्तुत्यो नम्यश्च धर्म्याश्चिदचिदुभयव्यापिवर्ष्मानिरूष्मा

रामः स्वापं म एयादसितमणितनुर्दोलिकायां स चित्ते ॥८॥

जो श्रीरामजी वीरों के अग्रसर हैं तथा जो देव, दानव, मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के कर्ता रक्षक तथा नाश करनेवाले भी हैं, सभी प्रशस्तियों से युक्त हैं हेयगुणों के स्पर्श से भी रहित हैं। तथा जो परात्पर हैं, स्थूल एवं सूक्ष्म चेतन तथा अचेतन को अपने शरीर में समाये हुये हैं। तथा सर्वोत्कृष्ट विनय निरभिमानता आदि गुणों से सम्पन्न हैं। इसलिये केवल वे ही स्तुति के प्रणाम के तथा ध्यान के योग्य हैं ऐसे नीलमणि के समान कान्ति से युक्त शरीरवाले श्रीरामजी मेरे मनरूपी पालने में शयन करें मेरा मन सदा ही उनमें लगा रहे ॥८॥

ततो निवेदितनैवेद्यं मनसा चतुर्भागं परिकल्प्य श्रीहनुमदङ्गदसुग्रीवविभीषणेभ्यो निवेद्यानन्तरं पूर्वाचार्यादिभ्यः स्वाचार्येभ्यश्चनिवेद्य शेषं भागवतैः सहभुञ्जीत।

अनन्तर श्रीरामजी को निवेदित नैवेद्य को मनसे चार भाग की कल्पना करके "**हुं हनुमते नमः**" इस मन्त्र से श्रीहनुमानजी को तथा **अं अंगदाय नमः** बोलकर श्रीअंगदजी को तथैव **सुं सुग्रीवाय नमः** इस मन्त्र से श्रीसुग्रीवजी और **विं विभीषणाय नमः** बोलकर श्रीविभीषमजी को निवेदन करने के वाद **ॐ ब्रह्मादि समस्त पूर्वाचार्येभ्यो नमः महा नैवेद्यं समर्पयामि** ऐसा बोलकर समस्त पूर्वाचार्यों को राज भोग का समर्पण करने के वाद **ॐ स्वाचार्येभ्यो महाप्रसादं समर्पयामि** ऐसा बोलकर स्वाचार्यजी को महाप्रसाद समर्पण करने के वाद शान्तचित्त से भागवत तथा समागत अभ्यागतों के साथ महाप्रसाद का सेवन करें। श्रीवैष्णवों को यह खास खयाल रखना चाहिये कि जब कभी जो कोई भोज्य पदार्थ परेश श्रीरामजी को भोग लगाया जाये पूर्वोक्त विधि से सभी को

Scanned by CamScanner

समर्पित करके ही स्वयं सेवन करे एकाकी नहीं ।

रामानन्दोपदिष्टेयं श्रीरामार्चनपद्धतिः । मुमुक्षूणां मुदेभूयाच्छ्रीरामप्रीतिकारिणी ।१।
अर्चकोयःसमभ्यर्चेदास्थायेमामहर्दिवम्। प्रासाद्य सगणं रामं लभतेगतिमुत्तमाम् २

इत्यानन्दभाष्यकारजगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यप्रणीतश्रीवैष्णवमताब्जभास्करपरिशिष्ट

॥ श्रीरामर्चनपद्धतिः ॥

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐

"मङ्गलादिनी मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषाणि भवन्त्यायुष्मत्पुरुषाणि चाध्येतारश्च मङ्गलयुक्ताः स्युः" इस स्मृति वचनानुसार आचार्य सम्राट् जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी प्रबन्ध प्रकरणान्त में आशीर्वादात्मक मङ्गल वचन पूर्वक प्रकरणोपसंहार करते हैं-**रामानन्द** इत्यादि ।

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी से स्वशिष्य जगद्गुरु श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी के **"तत्वं किम्"** ? आदि दश प्रश्नों को निमित्त बनाकर सर्वलोकोपकारार्थ उपदिष्ट यह सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के श्रीचरणों में अनन्य प्रीति करनेवाली श्रीरामार्चन पद्धति सब मुमुक्षुजनों के लिये सायुज्य मुक्ति प्राप्त कराने वाली हो ॥१॥

जो अर्चक श्रीरामजी की पूजा इस श्रीरामार्चनपद्धति के विधानानुसार सदा त्रिकाल अच्छी तरह से समाराधन करेगा वह श्रीरामजी के एवं गणों के साथ उन्हें प्रसन्नकर सर्वोत्तम सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करेगा ॥२॥

इसप्रकार यह आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यप्रणीत श्रीवैष्णव मताब्जभास्कर का परिशिष्टभाग पूरकभाग श्रीरामार्चनपद्धति की जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्य योगीन्द्र शिष्य आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीत गङ्गा टीका पूर्ण हुई ।

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐

श्रावणशुक्लसप्तमी २०४२

॥ आचार्यस्तुतिचन्द्रिका ॥

卐 जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामप्रपन्नाचार्ययोगीन्द्रप्रणीता 卐

सज्ञानन्ति सदाचारान् सदाचारान् वदन्त्यपि ।
रामब्रह्मरतान् तांस्तु स्वाचार्यान् प्रणमाम्यहम् ॥१॥

Scanned by CamScanner

सर्वथा गुरुनिष्ठान् तान् गुरोराज्ञाकरान् तथा ।
गुरुपूजारतान् तांस्तु स्वाचार्यान् प्रणमाम्यहम् ॥२॥
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः सीतारामपरायणः । प्रणमामि सदाऽचार्यान् सदाचाराभिवृद्धये ॥३॥
सीताराम समारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् । रघुवरार्य गुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥४॥
सीता स्वयं हि सावित्री भवान् ब्रह्मा चतुर्मुखः ।
सीता रमा भवान् विष्णुः सीता गौरी भवान् शिवः ॥५॥
सीता भुक्ति र्भगवती भोक्ता त्वं पुरुषोत्तमः। सीतेयं मुक्तिरचला मोक्ता त्वमकुतोभयः६
रमन्ते योगिनो यस्मिन् राम त्वं ब्रह्म तत्परम् ।
त्वद्विभूतिरियं सीता विश्वाकारा हि दृश्यते ॥७॥
सत्यानन्दस्त्वमेवासि यत्र भेदो न दृश्यते ।
सीतारामहं वन्दे भक्तियोगसमन्वितम् ॥८॥
दिव्यदेहगुणं रामं सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः प्रणमामि हृदि स्थितम् ॥९॥
दिव्यदेहगुणां सीतां सच्चिदानन्दविग्रहाम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः प्रणमामि हृदि स्थिताम् ॥१०॥
मैथिलीहृदयं रामप्रियं मारुतिनन्दनम् ।
अञ्जनीगर्भसम्भूतं हनुमन्तं महाबलम् ॥११॥
भक्तकामेष्टदं वीरं सीताशोकविनाशकम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥१२॥
ब्रह्माणं सृष्टिकर्तारं रामध्यानरतं सदा । रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥१३॥
वशिष्ठं ब्रह्मतत्त्वज्ञं वेधसो मानसं सुतम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥१४॥
पराशरं वशिष्ठस्य पौत्रं धर्मविदांवरम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥१५॥
व्यासं द्वैपायनं ब्रह्म सूत्रकर्तारमच्युतम् ।
अष्टादशपुराणानां कर्तारं वादरायणम् ॥१६॥
वेदोपनिषदां तत्त्वविदं सत्यवतीसुतम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥१७॥

Scanned by CamScanner

व्यासपुत्रं शुकाचार्यं मोहमायाविवर्जितम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः प्रणमामि जगद्गुरुम् ॥१८॥

बोधायनं वृत्तिकारमाचार्यं पुरुषोत्तमम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः प्रणमामि जगद्गुरुम् ॥१९॥

प्राज्ञं गङ्गाधराचार्यं शिष्यं बोधायनस्य तु।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः प्रणमामि जगद्गुरुम् ॥२०॥

सदानन्दं तपोनिष्ठं रामयज्ञप्रवर्धकम्। रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२१॥

रामेश्वरं वेदविदं बौद्धवादविखण्डकम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२२॥

द्वारानन्दं यतिश्रेष्ठं तर्कशास्त्रे विचक्षणम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२३॥

सीतारामस्य सद्भक्तं देवानन्दं महायतिम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२४॥

श्यामानन्दं श्रुतौ श्रेष्ठं श्रुतितात्पर्यबोधकम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२५॥

श्रुतानन्दं श्रुतौ दक्षं श्रौतसिद्धान्तकोविदम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२६॥

सच्चिदानन्दतत्त्वज्ञं चिदानन्दं जगद्गुरुम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२७॥

पूर्णानन्दं ब्रह्मनिष्ठं ब्रह्मविद्याप्रचारकम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२८॥

श्रियानन्दं यतिश्रेष्ठं रामतत्त्वप्रदेशकम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥२९॥

हर्यानन्दं महासिद्धं न्यायशास्त्रविशारदम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥३०॥

ब्रह्मर्षिं राघवानन्दं वेदवेदाङ्गपारगम्।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥३१॥

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तो वैदिकः इति यो ऽवदत्।

रामानन्दः स्वयं यमी प्रादुर्भूतो महीतले ॥३२॥

खंनभोवेदवेदप्रमिते (४४००) वर्षे गते कलौ ।

माघस्यकृष्णसप्तम्यामाचार्यः समवातरत् ॥३३॥

रसर्षिबाणवेदाब्दे (४५७६) मधुमासे कलौ शुभे ।

श्रीमद्रामनवम्यां वै साकेतमगमत्प्रभुः ॥३४॥

आनन्दभाष्यकारं तं रामानन्दं जगद्गुरुम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥३५॥

रघुनाथसुतोजातः भवनाथेति विश्रुतः ।

वेदवेदान्ततत्त्वज्ञः शिवनाथाग्रजः सुधीः ॥३६॥

रामानन्दगुरोर्दीक्षामवाप्य वैष्णवाग्रणीः ।

भावानन्देतिविख्यातः तमाचार्यं जगद्गुरुम् ॥३७॥

निरस्तबौद्धसिद्धान्तं धृतगौतमविग्रहम् ।

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तव्यापकं योगसाधकम् ॥३८॥

भावानन्दं महासिद्धम् विदेहं जानकीप्रियम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥३९॥

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तप्रतिपाद्ये चिदात्मनि ।

सीतारामे सदालीनं तत्त्वज्ञं तत्त्वदर्शिनम् ॥४०॥

अनुभवार्यमाचार्यं श्रुतिज्ञञ्च तपोनिधिम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४१॥

विरजानन्दमाचार्यं यतीन्द्रं तत्त्ववित्तमम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४२॥

आशारामं महासिद्धं हाथीरामेति विश्रुतम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४३॥

रामभद्रं रामभक्तं तत्त्वज्ञानप्रबोधकम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४४॥

रघुनाथं तपोनिष्ठं रामतत्त्वोपदेशकम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४५॥

विश्वम्भरं त्रिकालज्ञं तत्त्वत्रयविचारकम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४६॥
राघवेन्द्रं गुरोः भक्तं जानकीप्रीतिभाजनम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४७॥
वैदेहीवल्लभाचार्यं रामतत्त्वविचारकम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४८॥
कोसलेन्द्रं तपोनिष्ठं सदाचारप्रवर्धकम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥४९॥
रामकिशोरमाचार्यं ब्रह्मतत्त्वविवेचकम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५०॥
श्रीजानकीनिवासाख्यं सीतातत्त्वविवेचकम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५१॥
श्रीसाकेतनिवासाख्यं वेदवेदान्तपारगम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५२॥
जानकीजीवनाचार्यं जानकीतत्त्वकोविदम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५३॥
भरताग्रजमाचार्यं रामतत्त्वरतं सदा । रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५४॥
पूज्यं हनुमदाचार्यं तपोनिष्ठं गुरोर्गुरुम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५५॥
वेदवेदाङ्गशास्त्राणां तत्त्वज्ञं तार्किकं वुधम् ।
शास्त्रसम्मतशास्त्रार्थे विरोधिजयिनं प्रभुम् ॥५६॥
सर्वज्ञं सम्प्रदायस्य स्थितिस्थापनकारिणम् ।
सर्वदा शिष्यनिचयैः भूषितं भूपतिप्रियम् ॥५७॥
विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तनिष्णातं पण्डितं सदा ।
सीतारामजपे लीनं वैष्णवानन्दवर्धकम् ॥५८॥
गुरुं रघुवराचार्यमज्ञानध्वान्तवारकम् ।
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यं प्रणमाम्यहम् ॥५९॥
रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्यस्तुतिचन्द्रिकाम् ।
समर्पयामि निर्माय स्वाचार्यचरणेषु वै ॥६०॥

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐

Scanned by CamScanner

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी

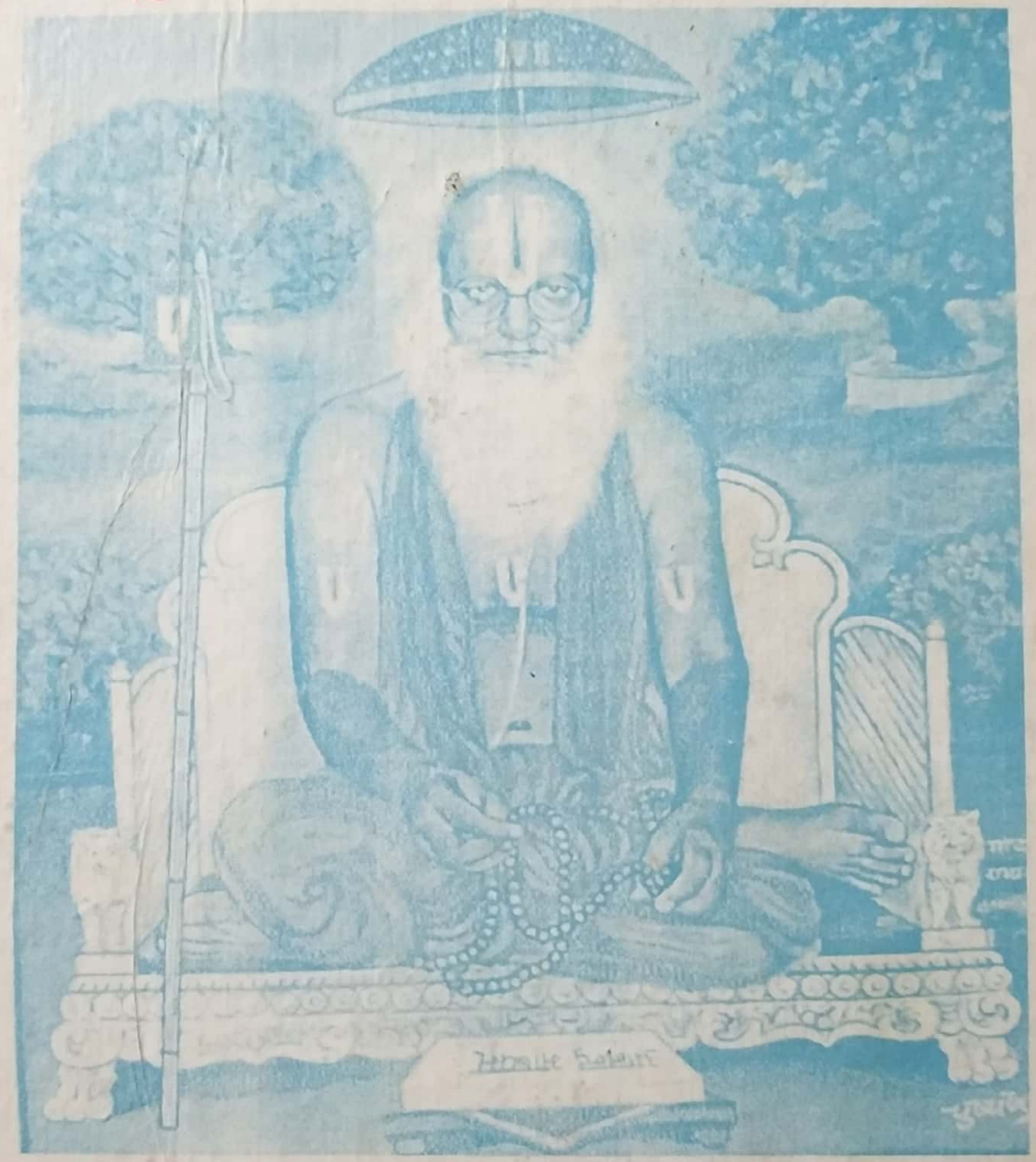

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ

श्रीकोसलेन्द्रमठ पो. पालडी, अहमदाबाद-३८०००७ दू. :-४११००१

Scanned by CamScanner